नई दिल्ली, उत्तर प्रदेश, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, झारखंड, उड़ीसा, बिहार से प्रसारित

सोशल मीडिया से जुड़ें
Parivehan_Vishesh

www.newsparivahan.com

परिवहन विशेष

RNI No :- DELHIN/2023/86499
DCP Licensing Number : F.2 (P-2) Press/2023

वर्ष 04, अंक 193, नई दिल्ली, रविवार 18 अक्टूबर 2026, मूल्य ₹ 5, पेज 8

देश का पहला ट्रांसपोर्ट दैनिक समाचार पत्र



03 त्योहार, परिवार और मन की शांति

06 वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल !

08 ओडिशा के नवनियुक्त राज्यपाल ब्रजमोहन राम का भव्य स्वागत, कल लेंगे शपथ

दिल्ली परिवहन विभाग की बस द्वारा एक और जान ली गई - आनंद पर्वत में रूट 949 ने सीधा कुचला

DBG रोड पर शनिवार सुबह हादसा — 1 की मौत, 5 घायल | बस पर DTC नहीं, दिल्ली परिवहन विभाग लिखा था | महिला चालक मौके से फरार

रिपोर्ट नवदीप सिंह परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक — संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक

मुख्य बिंदु — तथ्यों सहित

- 1. स्थान और दिनः आनंद पर्वत, DBG रोड, दिल्ली — शनिवार, 17 अक्टूबर 2026, सुबह

- 2. बस की पहचानः वीडियो में बस पर DTC नहीं, Delhi Transport Department / दिल्ली परिवहन विभाग लिखा हुआ स्पष्ट है। बस के डिस्प्ले पर रूट 949 और PGD (W) अंकित है

- 3. दिशाः बस टिकरी बॉर्डर की ओर जा रही थी

- 4. हादसे की प्रकृतिः बस ने पटरी पर नहीं, सीधा स्कूटी सवारों और पैदल चलने वालों को कुचला। स्कूटी बस के नीचे फँसी हुई है। एक ई-रिक्शा और दो बाइक भी चपेट में आए

- 5. हताहतः 1 व्यक्ति की मौके पर मौत, 5 लोग घायल — स्कूटी पर सवार दो युवकों में से एक की अस्पताल में मौत हुई, दूसरा गंभीर घायल है

- 6. चालकः प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार बस महिला चालक चला रही थी, जो हादसे के बाद मौके से फरार हो गई, पुलिस तलाश कर रही है

- 7. भीड़ का आक्रोशः पुलिस के पहुँचने से पहले भीड़ ने बस पर पथराव किया, बस की खिड़कियों के शीशे टूटे

- घटना स्थल पर स्थितिः बस के पास क्षतिग्रस्त दोपहिया वाहन का मलबा, फुटपाथ पर खून के निशान, सड़क पर एक व्यक्ति निश्चल अवस्था में पड़ा

- पुलिस और भीड़ः खाकी वर्दी में पुलिस मौके पर जाँच करती हुई, भीड़ ने बस को घेर लिया, लोग ड्राइवर से आक्रोशित दिखाई दिए

दिल्ली की सड़कों पर एक बार फिर सरकारी बस ने एक जान ले ली। इस बार बस पर डीटीसी (DTC) नहीं, दिल्ली परिवहन विभाग लिखा था, लेकिन लापरवाही वही पुरानी थी।

रूट नंबर 949 की हरी बस, जो PGD (W) डिपो की बताई जा रही है, दिल्ली



की व्यस्त सड़क पर जा रही थी। वीडियो के गौर से देखने पर पता चलता है कि बस पटरी पर चढ़कर नहीं, सीधा सड़क पर चल रहे व्यक्ति को कुचलते हुए आगे बढ़ी। दोपहिया वाहन भी उसके चपेट में आया और चूर-चूर हो गया।

हादसे के बाद का दृश्य भयावह था। सड़क पर एक व्यक्ति पड़ा था, फुटपाथ पर खून के निशान थे और आसपास जमा भीड़ में गुस्सा था। पुलिस मौके पर पहुँची और स्थिति को संभाला, लेकिन तब तक एक परिवार का चिराग बुझ चुका था।

सवाल यह नहीं है कि बस किस विभाग की थी — सवाल यह है कि सरकारी बसों की लापरवाही कब रुकेगी? हर बार हादसे के बाद जाँच की बात होती है, ड्राइवर को निलंबित किया जाता है, लेकिन सिस्टम नहीं बदलता। चालक प्रशिक्षण, गति नियंत्रण, ब्रेक और स्टीयरिंग की जाँच, और भीड़भाड़ वाले रूट पर निगरानी — इन सब पर सवाल खड़े होते हैं।

दिल्ली परिवहन विभाग को इस घटना की जिम्मेदारी लेनी होगी। केवल मुआवजे की घोषणा से जान वापस नहीं आएगी।

> संपादकीय टिप्पणी: सड़क पर चलने वाला हर नागरिक सुरक्षित है, यह राज्य की जिम्मेदारी है। जब सरकारी बस ही जान लेने लगे, तो व्यवस्था पर भरोसा कैसे बनेगा?

सूत्रों के अनुसार एक व्यक्ति की मौत और पांच अन्य घायल हुए, बस ने स्कूटी को टक्कर मारने के बाद नियंत्रण खो दिया। बस एक ई-रिक्शा, दो बाइक और स्कूटी सवार को टकराई, जो टिकरी बॉर्डर की ओर जा रही थी। प्रत्यक्षदर्शियों ने बताया कि बस एक महिला चला रही थी, 2-3 लोग घायल हुए, एक की मौके पर मौत हुई, एक स्कूटी अभी भी बस के नीचे फंसी है।

विस्तृत संपादकीय लेख - नई दिल्ली, आनंद पर्वत। राजधानी की सड़कों पर फिर एक सरकारी बस ने जान ली। इस बार भी स्थान वही था जहाँ डेढ़ महीने पहले भी हादसा हुआ था और तब भी कोई कार्रवाई नहीं हुई।

शनिवार सुबह DBG रोड पर दिल्ली परिवहन विभाग की रूट 949 की बस तेज गति से आ रही थी। बस ने स्कूटी को टक्कर मारी, फिर बेकाबू होकर पैदल चल रहे लोगों और ई-रिक्शा को रौंदते हुए आगे बढ़ी। बस सीधा कुचलती हुई गई, पटरी पर नहीं चढ़ी।

मौके पर एक व्यक्ति की मौत हो गई। घायलों को अस्पताल भेजा गया। पुलिस और फॉरेंसिक टीम मौके पर पहुँची और जाँच शुरू की।

> स्थानीय लोगों का आरोप: "यहाँ हमेशा जाम रहता है, चलने की जगह नहीं है। रिक्शा और दुकानों ने सड़क घेर रखी है। इसी वजह से आज एक व्यक्ति की मौत हुई।"

संपादकीय टिप्पणी: सवाल सिर्फ चालक का नहीं है। सवाल यह है कि डेढ़ महीने पहले के हादसे से विभाग ने क्या सीखा? चालक प्रशिक्षण, गति नियंत्रण, भीड़भाड़ वाले रूट पर निगरानी और अतिक्रमण पर कार्रवाई — सब पर जवाबदेही तय होनी चाहिए।

मांगें — परिवहन विशेष की ओर से

1. हादसे की तत्काल उच्च स्तरीय जाँच हो

2. चालक की लाइसेंस और फिटनेस की जाँच सार्वजनिक हो

3. रूट 949 पर CCTV और स्पीड गवर्नर की जाँच हो

4. मृतक के परिवार को तत्काल मुआवजा और न्याय मिले

5. दिल्ली परिवहन विभाग की सभी बसों का सुरक्षा ऑडिट हो और सार्वजनिक रिपोर्ट की जाए।

शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं
आठवीं देवी मां महागौरीमां की अनुपम ममता और आशीर्वाद आप पर सदा बना रहे

परिवहन विशेष न्यूज

ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक, टेंपल ऑफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट (पंजीकृत), ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर्स एंड लेबर वेलफेयर एसोसिएशन (पंजीकृत) के प्रमुख साझा प्रबंधन मंडल की ओर से आप सभी को शारदीय नवरात्रों की हार्दिक शुभकामनाएं।

> "मां की अनुपम ममता और कृपा सब पर बनी रहे यही कामना है हमारी।"

> — संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक | पिंकी कुंडू, सह संपादक

> Parivahan Vishesh Newspaper RNI DELHIN/2023/86499

मुख्य तथ्य — मां महागौरी का स्वरूप

- नवरात्रि की आठवीं देवीः मां महागौरी — नवदुर्गा में आठवां स्वरूप

- पूजा तिथिः महाअष्टमी — आठवें दिन विशेष आराधना, हवन, कन्या पूजन

- स्वरूपः गौर वर्ण, श्वेत वस्त्र, चंद्रमा के समान तेज — "गौरी" अर्थात गौर वर्ण वाली

- वाहनः वृषभ (बैल)

- भुजाएंः चार — त्रिशूल और डमरू धारण करती हैं, एक हाथ अभय मुद्रा में, एक हाथ वरद मुद्रा में

- बीज मंत्रः ॐ देवी महागौर्यै नमः ॥

- कथाः कठोर तपस्या के कारण मां का वर्ण श्याम हुआ, शिव जी के वरदान से गंगाजल स्नान कर गौर वर्ण प्राप्त हुआ — तभी से महागौरी नाम पड़ा

- शक्तिः पाप नाश, पवित्रता, शुद्धता, सौभाग्य, वैवाहिक सुख और अखंड सौभाग्य की देवी

आराधना विधि — मुख्य बिंदु

1. प्रातःकालीन पूजाः

- स्नान, शुद्ध वस्त्र धारण, कलश स्थापना, मां को श्वेत पुष्प, श्वेत वस्त्र, नारियल, पंचामृत, खीर और हलवा-पूरी का भोग

2. कथा वाचनः

- मां महागौरी की कथा सुनना और सुनाना — शिव और पार्वती के तप, त्याग और भक्ति का संदेश

3. कन्या पूजनः

- महाअष्टमी पर नौ कन्याओं का पूजन, उन्हें भोजन, वस्त्र और दक्षिणा — यही नवरात्र की सबसे पवित्र परंपरा

4. हवन और जापः

- दुर्गा सप्तशती पाठ, महागौरी मंत्र जाप — ॐ देवी महागौर्यै नमः ॥ का 108 बार जाप

5. विशेष भोगः

- श्वेत भोग — खीर, नारियल, सफेद मिठाई, हलवा-पूरी — मां को अति प्रिय

मां महागौरी की कथा — संक्षिप्त सार मां पार्वती ने भगवान शिव को पति रूप में पाने के लिए घोर तप किया। तप की अग्नि से उनका शरीर श्याम वर्ण हो गया। शिव जी ने प्रसन्न होकर गंगाजल से अभिषेक किया और मां का वर्ण गौर हो गया। तभी से वे महागौरी कहलाईं। यह कथा बताती है कि तप, त्याग, धैर्य और शुद्धता से ही परम सिद्धि प्राप्त होती है।

भक्तों के लिए संदेश महागौरी की आराधना केवल पूजा नहीं है, यह शुद्धता, करुणा और ममता की आराधना है। जैसे मां का रूप श्वेत और शांत है, वैसे ही हमारा मन भी शुद्ध होना चाहिए।

> भक्तों से निवेदन है — इस महाअष्टमी को मां का दर्शन करें, कन्या पूजन करें, गरीबों को अन्नदान करें और मां का आशीर्वाद ग्रहण करें। मां महागौरी सभी कष्टों का नाश कर, सुख, शांति, समृद्धि और सौभाग्य प्रदान करेंगी।



आज का संदेश - अहंकार त्यागो, विनम्र रहो, कर्म ही पहचान है

जीवन की सच्ची रीति — मनुष्य निमित्त मात्र है, सब कुछ प्रभु की इच्छा और कृपा का विधान है

संजय कुमार बाठला प्रधान संपादक

जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है कि सत्ता, शक्ति और यौवन — तीनों का एक दिन अवसान निश्चित है। जो आज है, वह कल नहीं रहेगा। इसलिए अहंकार को त्याग देना और विनम्र रहना ही जीवन की सच्ची रीति है। जीवन में जो कुछ प्राप्त हो रहा है, उसी में प्रभु का कल्याणकारी मार्ग है। मनुष्य सिर्फ निमित्त मात्र है — सब कुछ प्रभु की इच्छा व कृपा का विधान है।

- 1. अवसान का सत्यः सत्ता जाती है, शक्ति क्षीण होती है, यौवन ढलता है — स्थाई कुछ भी नहीं, इसलिए अहंकार व्यर्थ है

- 2. विनम्रता ही महानता हैः जितना बदलना था बदल लिया खुद को, अब जिसको शिकायत है वो अपना रास्ता बदले — आत्म-परिवर्तन ही असली परिवर्तन है

- 3. बड़ाई की कसौटीः इंसान बड़ा या छोटा उसके पद, पैसे या उम्र से नहीं, बल्कि उसके मन और विचारों से होता है

- 4. सही-गलत की पहचानः इंसान सही या गलत उसके शब्दों से नहीं, बल्कि उसके कर्मों से पहचाना जाता है

- 5. सोच और कर्मः अच्छी सोच इंसान को महान बनाती है और अच्छे कर्म उसे सम्मान के योग्य बनाते हैं

1. अहंकार — सबसे बड़ी बाधा

अहंकार मनुष्य को अंधा कर देता है। वह भूल जाता है कि वह निमित्त मात्र है। जो व्यक्ति अहंकार में डूबता है, वह रिश्ते, सम्मान और शांति — सब खो देता है।

2. विनम्रता — सबसे बड़ी शक्ति

विनम्र व्यक्ति झुकता नहीं, वह महान होता है। विनम्रता उसे सबके हृदय में स्थान दिलाती है। यही जीवन की सच्ची रीति है।

3. हालात समझो, व्यवहार देखो

> किसी को छोटा समझने से पहले उसके हालात समझिए और किसी को बड़ा मानने से पहले उसके व्यवहार को देखिए।

> क्योंकि असली पहचान चेहरे से नहीं, विचारों से होती है और असली मूल्य बातों से नहीं, कर्मों से तय होता है।

4. कर्म ही धर्म है

शब्द कितने भी सुंदर हों, अगर कर्म पवित्र नहीं हैं तो उनका कोई मूल्य नहीं। कर्म ही मनुष्य का असली परिचय है।

निष्कर्ष — आज का संकल्प

> अच्छी सोच रखो, अच्छे कर्म करो, अहंकार त्यागो, विनम्र रहो।

> यही बहुमूल्य प्रवचन हमें सिखाता है — जीवन में जो मिला है, उसी में प्रभु का आशीर्वाद मानो, और जो नहीं मिला, उसकी शिकायत छोड़कर अपने कर्मों को श्रेष्ठ बनाओ।



एक जनहित में अपील - A Mission for Public Welfare

दिल्ली में प्रदूषण चालान बनाम यू-टर्न बनाम महत्वपूर्ण ट्रैफिक सिग्नल/जंक्शन को बंद करना -
-PUC न होने और अधिक प्रदूषण में अंतर क्यों समझना जरूरी है?

लेखक: पी.एस. बहल (P.S. Bahl) - कानून का पालन करने वाला नागरिक | कन्वीनर, NSUF (नेबरिंग सोसाइटीज यूनिटी फोरम) सेक्टर-13, रोहिणी | प्रेसिडेंट, विक्रांत अपार्टमेंट, सेक्टर-13 रोहिणी, दिल्ली-85 | एक्स डिप्टी कमिश्नर ट्रांसपोर्ट और दिल्ली पुलिस ऑफिसर

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक — संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक

मुख्य बिंदु — तथ्यों सहित

- 1. मुद्दा व्यक्तिगत नहीं, सार्वजनिक हैः यह केवल एक व्यक्ति के चालान की समस्या नहीं है, यह दिल्ली के लाखों वाहन चालकों के अधिकार, समानता और लोक कल्याण का प्रश्न है

- 2. दो अलग परिस्थितियाँः (A) सिर्फ PUC Certificate न होना — कागजी कमी, (B) वास्तव में वाहन से निर्धारित सीमा से अधिक प्रदूषण निकलना — पर्यावरणीय अपराध। दोनों में समान भारी पेनल्टी क्या उचित है?

- 3. U-Turns की समस्याः दिल्ली में बिना साइनेज, बिना कट और बिना डिजाइन के U-Turn, और दूसरी ओर Strategic Traffic Signal / Junction का अचानक बंद करना — दोनों से ट्रैफिक जाम, ईंधन की बर्बादी, प्रदूषण में वृद्धि और दुर्घटनाएँ बढ़ती हैं

- 4. नागरिक जागरूकता ही शक्ति हैः Awareness is our strength, Unity is our voice, Public welfare is our mission

विस्तृत विश्लेषण रिपोर्ट

1. संवैधानिक आधार — मूल अधिकार

- अनुच्छेद 14 — समानता का अधिकारः समान परिस्थितियों में समान कानून लागू होना चाहिए। PUC न होने और अधिक प्रदूषण करने वाले को एक ही तराजू में तौलना अनुच्छेद 14 की भावना के विरुद्ध है।

- अनुच्छेद 19(1)(d) — स्वतंत्र भ्रमण का अधिकारः नागरिक को पूरे भारत में स्वतंत्र रूप से घूमने का अधिकार है। U-Turn का अभाव और जंक्शन बंद करने से यह अधिकार बाधित होता है।

- अनुच्छेद 21 — जीवन और स्वच्छ पर्यावरण का अधिकारः Supreme Court ने Subhash Kumar vs State of Bihar (1991) और M.C. Mehta vs Union of India श्रृंखला में माना कि स्वच्छ वायु और पानी जीवन के अधिकार का अभिन्न अंग है। लेकिन उसी अनुच्छेद 21 के तहत नागरिक को उचित, न्यायसंगत और तर्कसंगत प्रक्रिया का भी अधिकार है। बिना उचित परीक्षण के भारी चालान अनुच्छेद 21 के विरुद्ध हो सकता है।

2. मोटर वाहन अधिनियम, 1988 — कानूनी ढांचा

- धारा 190(2) — प्रदूषण मानक उल्लंघनः Motor Vehicles (Amendment) Act, 2019 के बाद प्रदूषण मानकों के उल्लंघन पर 10,000 तक जुर्माना। पर यह जुर्माना तब जब वास्तविक प्रदूषण माप निर्धारित सीमा से अधिक हो।

- धारा 190(1) और Rule 115 — PUC Certificate: Central Motor Vehicles Rules, 1989 के Rule 115 के तहत हर वाहन के लिए PUC अनिवार्य है। PUC न होने पर भी चालान हो सकता है, लेकिन यह प्रक्रियात्मक उल्लंघन है, न कि वास्तविक प्रदूषण अपराध।

- धारा 119 — ट्रैफिक संकेतों का पालनः U-Turn और जंक्शन बंद करने से संबंधित नियम Delhi Police Act, 1978 की धारा 28 और दिल्ली ट्रैफिक पुलिस की Gazette Notifications से नियंत्रित होते हैं। बिना Gazetted Notification के किसी Strategic Junction को बंद करना विधिसम्मत नहीं है।

- धारा 184 — खतरनाक ड्राइविंगः यदि गलत U-Turn के कारण दुर्घटना हो, तो यह धारा लागू होगी, पर पहले सड़क का डिजाइन और साइनेज ठीक होना चाहिए।

3. न्यायिक आदेश और अधिसूचनाएँ

- Supreme Court — M.C. Mehta Cases: दिल्ली में प्रदूषण नियंत्रण हेतु PUC सिस्टम अनिवार्य किया गया। Court का उद्देश्य प्रदूषण कम करना था, नागरिकों को अनुचित दंड देना नहीं।

- Delhi High Court — Traffic Management PILs: न्यायालय ने कई बार निर्देश दिया है कि सड़क डिजाइन, U-Turn, फुटपाथ और सिग्नल प्रबंधन वैज्ञानिक ट्रैफिक अध्ययन के आधार पर हो।

- Gazette Notifications: दिल्ली सरकार और परिवहन विभाग की अधिसूचनाओं के तहत PUC केंद्रों का मानकीकरण, प्रदूषण जांच की प्रक्रिया और जुर्माने की दरें तय हैं। बिना माप और बिना परीक्षण के केवल कागज न होने पर अधिकतम दंड देना अनुपात के सिद्धांत (Doctrine of Proportionality) के विरुद्ध है — जैसा कि S. G. Jaisinghani vs Union of India में न्यायालय ने कहा।

4. U-Turns Vs Closure — व्यवहारिक विश्लेषण

- U-Turn न होनाः वाहन चालक को 2-3 किमी अतिरिक्त घूमना पड़ता है — ईंधन बर्बादी, समय की हानि, प्रदूषण में 15-20% अतिरिक्त वृद्धि, और ट्रैफिक दबाव।

- Strategic Junction बंद करनाः बिना वैकल्पिक व्यवस्था के मुख्य जंक्शन बंद करने से आसपास की कॉलोनियों, बाजारों, अस्पतालों तक पहुँच बाधित होती है। यह Article 19 और Article 21 के तहत लोक कल्याण के विरुद्ध है।

- समाधानः U-Turn का डिजाइन IRC (Indian Roads Congress) मानकों के अनुसार, ट्रैफिक सिग्नल का समय और दूरी ट्रैफिक सर्वे के आधार पर, और किसी भी जंक्शन को बंद करने से पहले Public Notice + Gazette Notification + Traffic Police की स्वीकृति अनिवार्य हो।



जनहित अपील — पी.एस. बहल जी का संदेश

> यह आवाज़ सिर्फ मेरी नहीं, हम सबकी है। आइए, इस जनहित के मुद्दे पर एकजुट हों, जागरूक बनें और अपनी आवाज़ को शांतिपूर्ण, लोकतांत्रिक एवं कानूनी तरीके से संबंधित agencies तक पहुँचाएँ। मेरा प्रयास है कि इस मामले की उचित कानूनी समीक्षा हो और आवश्यकता पड़ने पर इसे संबंधित competent authorities तथा माननीय न्यायालयों के समक्ष उचित legal procedure के माध्यम से उठाया जाए। यदि मामला उपयुक्त हो, तो संबंधित authorities या Hon'ble Supreme Court द्वारा suo motu cognizance लेने अथवा PIL दाखिल करने की संभावनाओं पर भी विचार किया जा सकता है।

माँगें — जनहित में

1. PUC न होने और अधिक प्रदूषण में स्पष्ट कानूनी अंतर किया जाए, दंड अनुपातिक हो

2. Delhi में सभी U-Turns की वैज्ञानिक समीक्षा हो, IRC मानकों का पालन हो

3. किसी Strategic Junction को बंद करने से पहले Gazette Notification + Public Hearing अनिवार्य हो

4. Pollution Challan के साथ प्रदूषण माप की रिपोर्ट संलग्न हो

5. मामले को Competent Authority / Supreme Court के समक्ष उचित कानूनी प्रक्रिया से रखा जाए।

मांसपेशियों की उम्र को मात: व्यायाम विज्ञान में एक नई क्रांतिकारी दिशा

डॉ. विजय गर्ग



बढ़ती उम्र जीवन का स्वाभाविक सत्य है, लेकिन उम्र के साथ मांसपेशियों की शक्ति, लचीलापन और कार्यक्षमता में होने वाली गिरावट को पूरी तरह अपरिहार्य नहीं माना जा सकता। आधुनिक विज्ञान ने यह स्पष्ट किया है कि नियमित व्यायाम मांसपेशियों को मजबूत बनाने, उनकी कार्यक्षमता बनाए रखने और उम्र बढ़ने के कारण होने वाले कई नकारात्मक परिवर्तनों को धीमा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। व्यायाम केवल शरीर को आकर्षक बनाने या वजन नियंत्रित रखने का साधन नहीं है, बल्कि यह शरीर की कोशिकाओं और जैविक प्रक्रियाओं को सक्रिय रखने का एक प्रभावी माध्यम भी है।

उम्र बढ़ने के साथ मांसपेशियों में क्या होता है?

उम्र बढ़ने के साथ शरीर में मांसपेशियों का द्रव्यमान और शक्ति धीरे-धीरे कम हो सकते हैं। इस स्थिति को सार्कोपीनिया कहा जाता है। इसके कारण व्यक्ति को सीढ़ियां चढ़ने, भारी सामान उठाने, कुर्सी से उठने और लंबी दूरी तक चलने में कठिनाई होने लगती है। गंभीर स्थिति में गिरने, हड्डियां टूटने और स्वतंत्र जीवन जीने की क्षमता प्रभावित होने का जोखिम भी बढ़ जाता है।

इस गिरावट के पीछे कई जैविक कारण होते हैं। मांसपेशियों की कोशिकाओं में ऊर्जा बनाने वाली माइटोकॉन्ड्रिया की कार्यक्षमता प्रभावित हो सकती है। कोशिकाओं की मरम्मत की प्रक्रिया धीमी पड़ सकती है और शरीर की मांसपेशी प्रोटीन बनाने की क्षमता भी घट सकती है। इसके अतिरिक्त, तंत्रिका तंत्र और मांसपेशियों के बीच तालमेल में होने वाले परिवर्तन शारीरिक शक्ति को प्रभावित करते हैं।

हालांकि, वैज्ञानिक अध्ययनों से पता चलता है कि उम्रदराज मांसपेशियां भी व्यायाम के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया दे सकती हैं। उचित प्रशिक्षण से उनकी शक्ति, सहनशक्ति और कार्यक्षमता में सुधार संभव है।

व्यायाम मांसपेशियों को कैसे मजबूत बनाता है?

व्यायाम मांसपेशियों में अनेक जैविक प्रतिक्रियाओं को सक्रिय करता है। विशेष रूप से प्रतिरोध प्रशिक्षण, जिसमें वजन उठाना, रेजिस्टेंस बैंड का उपयोग करना और अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार बॉडी-वेट व्यायाम करना शामिल है, मांसपेशियों के निर्माण में सहायक होता है।

जब मांसपेशियों पर नियंत्रित शारीरिक दबाव पड़ता है, तो शरीर मांसपेशी प्रोटीन के निर्माण और मरम्मत से जुड़ी प्रक्रियाओं को सक्रिय करता है। पर्याप्त पोषण और आराम मिलने पर मांसपेशियां अधिक मजबूत बन सकती हैं। यह लाभ केवल युवाओं तक सीमित नहीं है। वृद्ध व्यक्ति भी नियमित और उचित प्रशिक्षण से अपनी शारीरिक शक्ति में सुधार कर सकते हैं।

व्यायाम मांसपेशियों की ऊर्जा उत्पादन क्षमता को भी बेहतर बनाता है। तेज चाल से चलना, साइकिल चलाना और तैराकी जैसी गतिविधियां हृदय और फेफड़ों की कार्यक्षमता बढ़ाती हैं। इनके नियमित अभ्यास से मांसपेशियों को ऑक्सीजन का उपयोग करने और लंबे समय तक काम करने में सहायता मिलती है।

कोशिकाओं की मरम्मत और ऊर्जा का महत्व

मांसपेशियों की स्वस्थ कार्यक्षमता के लिए कोशिकाओं के भीतर ऊर्जा उत्पादन और क्षतिग्रस्त घटकों की मरम्मत आवश्यक है। माइटोकॉन्ड्रिया कोशिकाओं को ऊर्जा उपलब्ध कराती हैं। उम्र बढ़ने के साथ इनकी कार्यक्षमता में बदलाव आ सकता है, लेकिन नियमित शारीरिक गतिविधि ऊर्जा चयापचय से जुड़ी प्रक्रियाओं को बेहतर बनाने में सहायता करती है।

व्यायाम शरीर की प्राकृतिक अनुकूलन क्षमता को भी प्रोत्साहित करता है। मांसपेशियां शारीरिक गतिविधि के अनुसार स्वयं को ढालती हैं और समय के साथ अधिक प्रभावी ढंग से काम करना सीखती हैं। हालांकि, यह कहना वैज्ञानिक रूप से सही नहीं होगा कि व्यायाम सभी कोशिकाओं को युवा अवस्था में लौटा देता है। इसका वास्तविक लाभ उम्र से संबंधित कुछ परिवर्तनों को धीमा करना और कुछ कार्यात्मक कमियों में सुधार लाना है।

पोषण भी उतना ही आवश्यक

मांसपेशियों के विकास और मरम्मत में संतुलित आहार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। प्रोटीन शरीर को वे अमीनो एसिड उपलब्ध कराता है जिनकी आवश्यकता मांसपेशियों के निर्माण के लिए होती है। दूध, दही, अंडे, दालें, बीन्स, सोया, मेवे और अन्य प्रोटीनयुक्त खाद्य पदार्थ उपयोगी विकल्प हैं।

बढ़ती उम्र में पर्याप्त पोषण पर विशेष ध्यान देना चाहिए, क्योंकि शरीर की मांसपेशी प्रोटीन बनाने की प्रतिक्रिया कमजोर हो सकती है। इसके साथ ही पर्याप्त पानी, संतुलित ऊर्जा सेवन और आवश्यक विटामिन एवं खनिज भी महत्वपूर्ण हैं।

नींद और आराम को भी नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। व्यायाम के बाद शरीर को स्वस्थ होने और मांसपेशियों की मरम्मत करने के लिए समय चाहिए। इसलिए कठिन प्रशिक्षण के बीच पर्याप्त विश्राम आवश्यक है।

उम्रदराज लोगों के लिए व्यायाम की सही रणनीति

व्यायाम शुरू करने के लिए बहुत अधिक उम्र होना कोई बाधा नहीं है। महत्वपूर्ण यह है कि शुरुआत व्यक्ति की शारीरिक क्षमता और स्वास्थ्य के अनुसार की जाए। लंबे समय से निष्क्रिय व्यक्ति छोटी सैर, कुर्सी पर बैठकर किए जाने वाले सरल व्यायाम और हल्के प्रतिरोध प्रशिक्षण से शुरुआत कर सकता है।

एक संतुलित कार्यक्रम में सप्ताह में कम से कम दो दिन प्रमुख मांसपेशी समूहों के लिए शक्ति प्रशिक्षण, नियमित एरोबिक गतिविधियां, संतुलन सुधारने वाले अभ्यास और हल्के गतिशीलता व्यायाम शामिल किए जा सकते हैं। गतिविधियों की अवधि और कठिनाई धीरे-धीरे बढ़ानी चाहिए।

हृदय रोग, गंभीर जोड़ों की समस्या, बार-बार गिरने या अन्य स्वास्थ्य समस्याओं से पीड़ित व्यक्तियों को नया व्यायाम कार्यक्रम शुरू करने से पहले चिकित्सकीय सलाह लेनी चाहिए। जरूरत पड़ने पर फिजियोथेरेपिस्ट की सहायता लेना उपयोगी हो सकता है।

क्या व्यायाम वास्तव में मांसपेशियों की उम्र उलट सकता है?

इस प्रश्न का उत्तर सावधानी से समझना आवश्यक है। व्यायाम मांसपेशियों की खोई हुई शक्ति के कुछ हिस्से को वापस लाने, मांसपेशियों का आकार बढ़ाने और शारीरिक प्रदर्शन में सुधार करने में सक्षम है। यह उम्र से संबंधित गिरावट को धीमा भी कर सकता है। लेकिन इसका अर्थ यह नहीं है कि सभी जैविक परिवर्तन पूरी तरह समाप्त हो जाते हैं या वृद्ध मांसपेशियां बिल्कुल युवा मांसपेशियों जैसी बन जाती हैं।

इसलिए अधिक वैज्ञानिक निष्कर्ष यह है कि व्यायाम मांसपेशियों की उम्र से संबंधित कुछ कमियों में आंशिक सुधार कर सकता है और अन्य कमियों की प्रगति को धीमा कर सकता है।

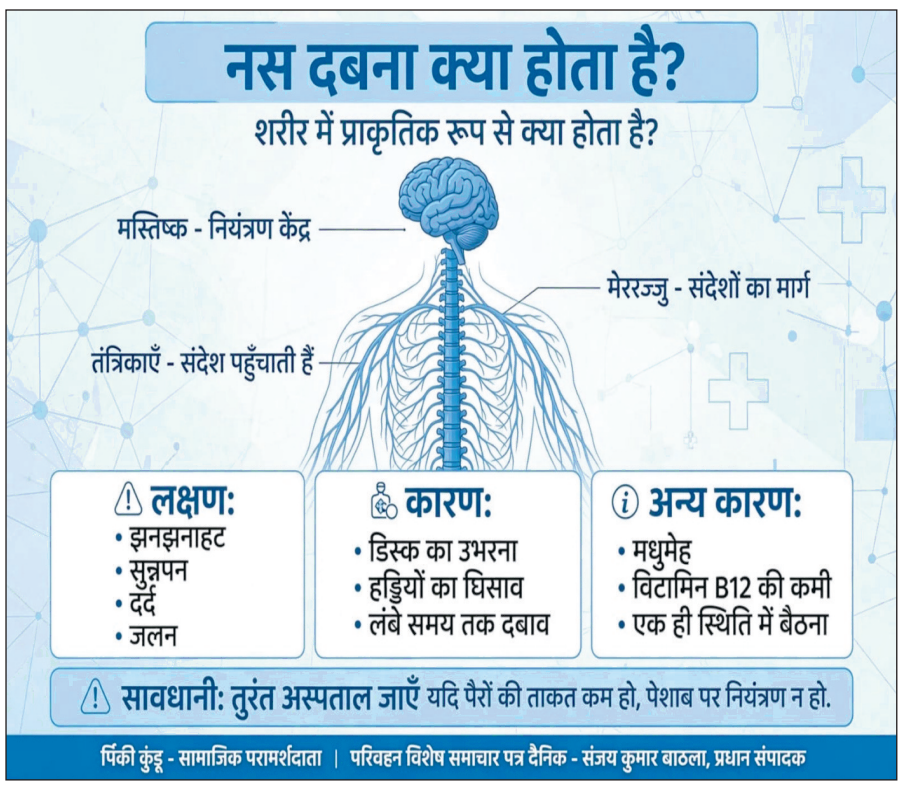
निष्कर्ष

व्यायाम विज्ञान ने स्वस्थ वृद्धावस्था के लिए नई संभावनाएं प्रस्तुत की हैं। नियमित शारीरिक गतिविधि, पर्याप्त प्रोटीन, संतुलित आहार और उचित आराम मांसपेशियों की शक्ति बनाए रखने के प्रभावी साधन हैं। इनका लाभ केवल शारीरिक क्षमता तक सीमित नहीं रहता, बल्कि व्यक्ति के आत्मविश्वास, स्वतंत्रता और जीवन की गुणवत्ता में भी दिखाई देता है।

उम्र बढ़ने की प्रक्रिया को रोका नहीं जा सकता, लेकिन उसके प्रभावों को बेहतर ढंग से संभाला जा सकता है। वास्तविक लक्ष्य शरीर को पूरी तरह युवा बनाना नहीं, बल्कि अधिक उम्र में भी सक्रिय, आत्मनिर्भर और स्वस्थ बने रहना है। नियमित व्यायाम इसी लक्ष्य की दिशा में एक वैज्ञानिक, व्यावहारिक और प्रभावशाली कदम है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार।
प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद, एमएचआर, मलोट, पंजाब – 152107

नस दबना क्या होता है? शरीर में प्राकृतिक रूप से क्या होता है?



पिंकी कुंडू सामाजिक परामर्शदाता

हम अक्सर सुनते हैं, "मेरी नस दब गई है", "रीढ़ की हड्डी में गैप है", "हाथ-पैरों में झनझनाहट होती है।" लेकिन नस क्या होती है और दबने पर शरीर में वास्तव में क्या होता है? आइए समझते हैं।

1. हमारे शरीर में नसों का क्या काम है? हमारे शरीर में मस्तिष्क (Brain), मेरुरज्जु (Spinal Cord) और तंत्रिकाएँ (Nerves) मिलकर तंत्रिका तंत्र (Nervous System) बनाते हैं।

मस्तिष्क शरीर के नियंत्रण केंद्र की तरह काम करता है।

1. मेरुरज्जु मस्तिष्क और शरीर के बीच संदेशों के आदान-प्रदान का प्रमुख मार्ग है।

2. तंत्रिकाएँ शरीर के अलग-अलग हिस्सों तक संदेश पहुँचाती हैं - उदाहरण के लिए, जब हम किसी गर्म वस्तु को छूते हैं, तो त्वचा के संवेदना ग्रहण करने वाले भाग गर्मी की सूचना तंत्रिका तंत्र तक पहुँचाते हैं। शरीर तुरंत हाथ पीछे खींच सकता है। इसे रिफ्लेक्स एक्शन (Reflex Action) कहते हैं अर्थात, तंत्रिकाएँ हमें स्पर्श, दर्द और गर्मी का एहसास कराने के साथ-साथ मांसपेशियों की गतिविधियों में भी मदद करती हैं।

2. नस आखिर दबती कैसे है? रीढ़ की हड्डी से निकलने वाली तंत्रिकाओं की जड़ों पर कई कारणों से दबाव पड़ सकता है।

* रीढ़ की हड्डी के बीच की डिस्क का बाहर की ओर उभरना (Disc Herniation)।

* हड्डियों में घिसाव या अतिरिक्त वृद्धि के कारण तंत्रिका के गुजरने की जगह का संकरा होना।

* कलाई या कोहनी जैसे हिस्सों में तंत्रिका पर लंबे समय तक दबाव पड़ना।

इन स्थितियों में तंत्रिकाओं के सामान्य कामकाज पर असर पड़ सकता है।

ध्यान दें: हर व्यक्ति में डिस्क के उभरने का मतलब यह नहीं है कि उसकी नस दब गई है।

3. नस दबने पर झनझनाहट और दर्द क्यों होता है? तंत्रिकाएँ विद्युत और रासायनिक प्रक्रियाओं के माध्यम से संदेश पहुँचाती हैं। जब उन पर दबाव पड़ता है या सूजन होती है, तो संदेशों के संचार में बाधा आ सकती है। इसके कारण निम्नलिखित लक्षण दिखाई दे सकते हैं:

1. हाथों और पैरों में झनझनाहट होना।
2. जलन या सुन्नपन महसूस होना।
3. गर्दन की तंत्रिकाओं पर असर पड़ने से दर्द का हाथ तक पहुँचना।
4. कमर की तंत्रिकाओं पर असर पड़ने से नितंब से पैर तक दर्द फैलना।
5. गंभीर स्थिति में मांसपेशियों की ताकत कम होना।

4. क्या हर बार झनझनाहट होने का कारण नस दबना ही है? नहीं!

हाथ-पैरों में झनझनाहट होने के दूसरे कारण भी हो सकते हैं, जैसे:

1. मधुमेह के कारण तंत्रिकाओं को नुकसान पहुँचना।
2. विटामिन B12 की कमी।
3. लंबे समय तक एक ही स्थिति में बैठे रहना।
4. तंत्रिकाओं से संबंधित अन्य समस्याएँ।

इसलिए यदि झनझनाहट बार-बार होती है, तो डॉक्टर से उचित जाँच करवाना आवश्यक है।

5. नस दबने पर क्या करना चाहिए?

1. उचित जाँच करवाकर डॉक्टर की सलाह के अनुसार उपचार लें।
2. आवश्यकता पड़ने पर फिजियोथेरेपी और सुरक्षित व्यायाम करें।
3. लंबे समय तक एक ही स्थिति में बैठने से बचें और नियमित रूप से शरीर को हिलाते-डुलाते रहें।
4. बिना डॉक्टर की सलाह के दवाइयाँ न लें और रीढ़ की हड्डी को जोर लगाकर चटकाने से बचें।

महत्वपूर्ण सूचना: यदि अचानक पैरों की ताकत कम होने लगे, गुप्तांगों के आसपास सुन्नपन महसूस हो या पेशाब-पाखाने पर नियंत्रण खोने लगे, तो तुरंत अस्पताल जाएँ। ये गंभीर समस्या के संकेत हो सकते हैं।

ऑनलाइन मेडिकल पाठ्यक्रम: वैज्ञानिक साक्ष्यों की व्याख्या में आत्मविश्वास का मार्ग

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य।
प्रख्यात वैज्ञानिक

चिकित्सा विज्ञान असाधारण गति से आगे बढ़ रहा है। नई उपचार पद्धतियाँ, निदान तकनीकें, दवाइयाँ और चिकित्सकीय दिशा-निर्देश लगातार विकसित हो रहे हैं। ऐसे में स्वास्थ्य सेवा से जुड़े पेशेवरों के लिए नवीनतम वैज्ञानिक साक्ष्यों से अवगत रहना आवश्यक हो गया है। लेकिन केवल चिकित्सा संबंधी जानकारी प्राप्त करना पर्याप्त नहीं है। डॉक्टरों, मेडिकल विद्यार्थियों और शोधकर्ताओं को वैज्ञानिक अध्ययनों का आलोचनात्मक मूल्यांकन करना तथा विश्वसनीय निष्कर्षों और भ्रामक दावों के बीच अंतर करना भी सीखना चाहिए। ऑनलाइन मेडिकल पाठ्यक्रम इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं।

ऑनलाइन चिकित्सा शिक्षा का सबसे बड़ा लाभ इसकी लचीलापन है। चिकित्सा पेशेवरों की व्यस्त दिनचर्या के कारण पारंपरिक कक्षाओं में नियमित रूप से भाग लेना कठिन हो सकता है। ऑनलाइन पाठ्यक्रम उन्हें अपनी सुविधानुसार अध्ययन करने, जटिल विषयों को दोबारा समझने और विश्व के प्रतिष्ठित संस्थानों की शैक्षिक सामग्री तक पहुँचने का अवसर देते हैं। साक्ष्य-आधारित चिकित्सा, जैव-सांख्यिकी, शोध पद्धति, वैज्ञानिक अध्ययनों के आलोचनात्मक मूल्यांकन और व्यवस्थित समीक्षा जैसे विषय अब भौगोलिक सीमाओं से परे उपलब्ध हैं।

व्यवस्थित समीक्षा को समझना

व्यवस्थित समीक्षा (Systematic Review) किसी विशिष्ट प्रश्न से संबंधित शोध अध्ययनों की पहचान, मूल्यांकन और उनके निष्कर्षों के समेकन की एक सुव्यवस्थित प्रक्रिया है। सामान्य साहित्य समीक्षा के विपरीत, इसमें पूर्वनिर्धारित पद्धति अपनाई जाती है, जिससे पक्षपात की संभावना कम होती है और निष्कर्षों में पारदर्शिता बढ़ती है। उपयुक्त परिस्थितियों में अनेक अध्ययनों के परिणामों का सांख्यिकीय विश्लेषण करके समग्र प्रभाव का अनुमान लगाया जा सकता है। इस प्रक्रिया को मेटा-विश्लेषण (Meta-analysis) कहा जाता है।

साक्ष्य-आधारित चिकित्सा में व्यवस्थित समीक्षाओं का विशेष महत्त्व है, क्योंकि अलग-अलग शोध अध्ययनों के परिणाम कभी-कभी एक-दूसरे से भिन्न होते हैं। अध्ययन की रूपरेखा, नमूने का आकार, रोगियों की विशेषताएँ और शोध पद्धतियाँ निष्कर्षों को प्रभावित कर सकती हैं। उपलब्ध शोध साक्ष्यों का सामूहिक विश्लेषण करके व्यवस्थित समीक्षा चिकित्सा पेशेवरों को किसी विषय की व्यापक समझ विकसित करने में सहायता करती है।

हालाँकि, केवल व्यवस्थित समीक्षा कहलाने से कोई अध्ययन स्वतः विश्वसनीय नहीं हो जाता। उसकी गुणवत्ता अपनाई गई पद्धति, शामिल किए गए अध्ययनों की प्रासंगिकता और उपलब्ध साक्ष्यों की सीमाओं पर निर्भर करती है। इसलिए व्यवस्थित समीक्षाओं की सही और आलोचनात्मक व्याख्या करना एक आवश्यक व्यावसायिक कौशल है।

ऑनलाइन पाठ्यक्रम आत्मविश्वास कैसे बढ़ाते हैं?

अच्छी तरह तैयार किए गए ऑनलाइन पाठ्यक्रम जटिल शोध अवधारणाओं को छोटे और सरल अध्ययन खंडों में बाँट देते हैं। वीडियो व्याख्यान, संवादात्मक



अभ्यास, वास्तविक उदाहरण, प्रश्नोत्तरी और शोध-पत्रों के निर्देशित मूल्यांकन से विद्यार्थियों को यह समझने में सहायता मिलती है कि वैज्ञानिक साक्ष्य किस प्रकार तैयार और परखे जाते हैं।

इन पाठ्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थी स्पष्ट चिकित्सकीय प्रश्न तैयार करना, उपयुक्त शोध अध्ययनों की पहचान करना, पक्षपात के जोखिम का आकलन करना और सांख्यिकीय परिणामों की व्याख्या करना सीख सकते हैं। वे विश्वास अंतराल (Confidence Interval), सापेक्ष एवं निरपेक्ष जोखिम, अध्ययनों के परिणामों में विषमता तथा प्रकाशन पक्षपात जैसी अवधारणाओं को भी समझ सकते हैं।

शुरुआती विद्यार्थियों के लिए ये विषय कठिन हो सकते हैं, लेकिन नियमित अभ्यास और सरल शिक्षण सामग्री से इन्हें समझना आसान हो जाता है।

ऑनलाइन शिक्षा स्वतंत्र और तार्किक सोच को भी प्रोत्साहित करती है। शोध के किसी निष्कर्ष को बिना जाँच स्वीकार करने के बजाय विद्यार्थियों को प्रश्न पूछने के लिए प्रेरित किया जाता है। क्या अध्ययन की रूपरेखा उचित थी? क्या प्रतिभागी लक्षित जनसंख्या का प्रतिनिधित्व करते थे? क्या परिणाम चिकित्सकीय दृष्टि से महत्त्वपूर्ण थे? क्या अध्ययन की सीमाओं का उल्लेख किया गया था? क्या किसी प्रकार के पक्षपात ने निष्कर्षों को प्रभावित किया हो सकता है?

जब ऐसे प्रश्न वैज्ञानिक सोच का हिस्सा बन जाते हैं, तो शोध निष्कर्षों का मूल्यांकन करने में आत्मविश्वास बढ़ता है।

सांख्यिकीय परिणामों से चिकित्सकीय निर्णयों तक

चिकित्सा अनुसंधान की व्याख्या में एक बड़ी चुनौती सांख्यिकीय महत्त्व और चिकित्सकीय महत्त्व के बीच अंतर समझना है। कोई परिणाम सांख्यिकीय रूप से महत्त्वपूर्ण हो सकता है, लेकिन उससे रोगी के स्वास्थ्य में व्यावहारिक रूप से बड़ा सुधार हो, यह आवश्यक नहीं है। इसी प्रकार, किसी छोटे अध्ययन में उपचार लाभकारी दिखाई दे सकता है, जबकि उसकी प्रभावशीलता और सुरक्षा की पुष्टि के लिए बड़े तथा बेहतर शोध अध्ययनों की आवश्यकता हो सकती है।

साक्ष्य-आधारित चिकित्सा के ऑनलाइन पाठ्यक्रम प्रभाव के आकार, विश्वास अंतराल, निरपेक्ष जोखिम में कमी और आवश्यक उपचार संख्या जैसी अवधारणाओं को समझने में सहायता करते हैं। इनसे उपचार के संभावित लाभों और हानियों का संतुलित मूल्यांकन किया जा सकता है।

उदाहरण के लिए, किसी दवा के बारे में कहा जा सकता है कि वह किसी बीमारी के सापेक्ष जोखिम को 50 प्रतिशत कम करती है। लेकिन यदि प्रारंभिक जोखिम प्रति 1,000 लोगों में केवल दो मामलों का था, तो उपचार के बाद यह घटकर प्रति 1,000 लोगों में एक मामला रह जाएगा। इस प्रकार सापेक्ष जोखिम में 50 प्रतिशत की कमी के बावजूद निरपेक्ष कमी प्रति 1,000 लोगों में केवल एक मामला है।

इस अंतर को समझने से चिकित्सक रोगियों को उपचार के वास्तविक लाभों की अधिक सटीक जानकारी दे सकते हैं और बेहतर निर्णय लेने में उनकी सहायता कर सकते हैं।

शोध की सीमाओं को पहचानना आवश्यक

वैज्ञानिक साक्ष्यों की व्याख्या में आत्मविश्वास का अर्थ शोध निष्कर्षों को बिना प्रश्न किए स्वीकार करना नहीं है। व्यवस्थित समीक्षाएँ भी कमजोर गुणवत्ता वाले अध्ययनों, अधूरी जानकारी, चुनिंदा प्रकाशन और शामिल अध्ययनों के बीच अत्यधिक अंतर के कारण सीमित हो सकती हैं।

विद्यार्थियों को समझना चाहिए कि किसी साक्ष्य की विश्वसनीयता अनेक कारकों पर निर्भर करती है। इनमें शोध पद्धति की गुणवत्ता, परिणामों की संगति, अनुमानों की सटीकता और चिकित्सकीय प्रश्न के संदर्भ में साक्ष्य की प्रासंगिकता शामिल हैं।

उन्हें विश्वसनीय साक्ष्य के अभाव और किसी उपचार के अप्रभावी होने के ठोस प्रमाण के बीच अंतर भी समझना चाहिए। दोनों स्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं।

शोध-पत्रों के आलोचनात्मक मूल्यांकन, मान्यता प्राप्त मूल्यांकन उपकरणों और रिपोर्टिंग दिशा-निर्देशों के व्यावहारिक प्रशिक्षण से इन सीमाओं की पहचान करना आसान हो सकता है। यह कौशल आज विशेष रूप से महत्त्वपूर्ण है, जब स्वास्थ्य संबंधी सोशल मीडिया पोस्ट, शोध-सारांश और कृत्रिम बुद्धिमत्ता से तैयार उत्तर व्यापक रूप से उपलब्ध हैं।

चुनौतियाँ और भविष्य की राह

अनेक लाभों के बावजूद ऑनलाइन मेडिकल पाठ्यक्रमों की कुछ सीमाएँ भी हैं। विद्यार्थियों को तकनीकी शब्दावली, सांख्यिकीय अवधारणाओं और अनुभवी शिक्षकों से प्रत्यक्ष संवाद की कमी के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ सकता है। विश्वसनीय इंटरनेट और डिजिटल संसाधनों तक असमान पहुँच भी सीखने के अवसरों को प्रभावित करती है।

इन समस्याओं का समाधान संवादात्मक शिक्षण, विशेषज्ञ मार्गदर्शन, चर्चा मंचों, व्यावहारिक कार्यों और वास्तविक शोध-पत्रों पर आधारित मूल्यांकन से किया जा सकता है। पाठ्यक्रमों में केवल तथ्यों को याद करने के बजाय उनके व्यावहारिक उपयोग पर जोर दिया जाना चाहिए। विद्यार्थियों को यह समझाने का अवसर मिलना चाहिए कि उपलब्ध साक्ष्य किसी विशेष निष्कर्ष का समर्थन क्यों करते हैं।

मेडिकल कॉलेजों, विश्वविद्यालयों, अस्पतालों और व्यावसायिक संगठनों को सतत चिकित्सा शिक्षा में शोध साक्ष्यों के मूल्यांकन का प्रशिक्षण शामिल करना चाहिए। पाठ्यक्रमों को शोध पद्धतियों, चिकित्सकीय दिशा-निर्देशों और डिजिटल शिक्षण तकनीकों में होने वाले परिवर्तनों के अनुरूप नियमित रूप से अद्यतन करना भी आवश्यक है।

निष्कर्ष

ऑनलाइन मेडिकल पाठ्यक्रम शोध संबंधी समझ विकसित करने, व्यावसायिक आत्मविश्वास बढ़ाने और अधिक सूचित चिकित्सकीय निर्णय लेने का प्रभावी माध्यम बन सकते हैं। उनका वास्तविक मूल्य केवल जानकारी उपलब्ध कराने में नहीं, बल्कि विद्यार्थियों को उस जानकारी पर प्रश्न उठाने, उसका मूल्यांकन करने और जिम्मेदारीपूर्वक उपयोग करने की क्षमता प्रदान करने में है।

जब चिकित्सा पेशेवर व्यवस्थित समीक्षाओं की सही व्याख्या करना सीखते हैं, तो वे उपचार विकल्पों का बेहतर मूल्यांकन कर सकते हैं, वैज्ञानिक अनिश्चितताओं को स्पष्ट रूप से समझा सकते हैं और रोगियों को अप्रमाणित दावों से बचाने में सहायता कर सकते हैं। आधुनिक चिकित्सा में आत्मविश्वास धारणाओं के बजाय आलोचनात्मक चिंतन से विकसित होना चाहिए और चिकित्सकीय निर्णय सर्वोत्तम उपलब्ध वैज्ञानिक साक्ष्यों पर आधारित होने चाहिए।

व्यावहारिक अनुभव, विशेषज्ञ मार्गदर्शन और आजीवन सीखने की प्रतिबद्धता के साथ डिजिटल शिक्षा चिकित्सा क्षेत्र को अधिक सक्षम, जागरूक और जिम्मेदार बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दे सकती है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य। प्रख्यात वैज्ञानिक स्ट्रीट कौर चंद, एमएचआर, मलोट, पंजाब –

त्योहार, परिवार और मन की शांति



डॉ. विजय गर्ग

त्योहार हमारे जीवन में रंग, उमंग और खुशियों की गर्माहट लेकर आते हैं। ये परिवार के रिश्तों को मजबूत करने, मित्रों से मिलने, परंपराओं को जीवित रखने और सुंदर यादें संजोने के अवसर होते हैं। चाहे दीपावली हो, दशहरा, होली, ईद, क्रिसमस या कोई अन्य उत्सव, त्योहार हमें एकता, कृतज्ञता और आशा का महत्व समझाते हैं। लेकिन तैयारियों, खरीदारी, सामाजिक जिम्मेदारियों और अपेक्षाओं के बीच कई बार उत्सव की वास्तविक भावना खो जाती है। शांति और प्रसन्नता देने वाले त्योहार तनाव और थकान का कारण बन जाते हैं।

त्योहारों का वास्तविक उद्देश्य धन का प्रदर्शन करना, दूसरों से प्रतिस्पर्धा करना या अवास्तविक अपेक्षाओं को पूरा करना नहीं है। इनका सार खुशियाँ बाँटने, रिश्तों को सँवारने और अपने भीतर शांति अनुभव करने में है। सार्थक उत्सव के लिए महँगे उपहारों, भव्य सजावट या शानदार दावतों की आवश्यकता नहीं होती। कभी-कभी अपनों के साथ साधारण भोजन करना, दिल से बातचीत करना या जरूरतमंद की सहायता करना भव्य आयोजन से भी अधिक संतोष प्रदान करता है।

त्योहारों को यादगार बनाने में परिवार की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। ये विभिन्न पीढ़ियों को एक साथ बैठने, अनुभव साझा करने और सांस्कृतिक परंपराओं को आगे बढ़ाने का अवसर देते हैं। दादा-दादी और नाना-नानी पुराने त्योहारों की कहानियाँ सुना सकते हैं, माता-पिता बच्चों को रीति-रिवाजों के पीछे छिपे मूल्यों से परिचित करा सकते हैं और युवा अपनी नई सोच तथा उत्साह से उत्सव को आनंदमय बना सकते हैं। ऐसे पल भावनात्मक संबंधों को मजबूत करते हैं और बच्चों में प्रेम, सम्मान, सहयोग तथा अपनत्व की भावना विकसित करते हैं।

हालाँकि, आधुनिक जीवनशैली ने त्योहारों के साथ कई नए दबाव भी जोड़ दिए हैं। बढ़ते खर्च, सामाजिक तुलना, व्यस्त दिनचर्या और हर आयोजन को आदर्श बनाने की इच्छा अनावश्यक चिंता पैदा करती है। कई लोग सामाजिक प्रतिष्ठा बनाए रखने के लिए महँगे कपड़े खरीदने, कीमती उपहार देने या भव्य समारोह आयोजित करने के लिए बाध्य महसूस करते हैं। सोशल मीडिया पर दूसरों के उत्सवों की आकर्षक तस्वीरें इस दबाव को और बढ़ा देती हैं।

हमें याद रखना चाहिए कि प्रत्येक परिवार की आर्थिक स्थिति, जिम्मेदारियाँ और व्यक्तिगत परिस्थितियाँ अलग-अलग होती हैं। दूसरों के उत्सवों से अपनी खुशियों की तुलना करने से असंतोष ही बढ़ता है। सच्ची प्रसन्नता इस बात पर निर्भर नहीं करती कि हम कितना पैसा खर्च करते हैं, बल्कि इस बात पर निर्भर करती है कि हम कितना प्रेम, अपनत्व और समझदारी बाँटते हैं।

तनावमुक्त त्योहारों के लिए आर्थिक अनुशासन आवश्यक है। परिवारों को अपने बजट के अनुसार खर्च की योजना बनानी चाहिए, आवश्यकताओं को प्राथमिकता देनी चाहिए और दूसरों को प्रभावित करने के लिए कर्ज लेने से बचना चाहिए। सोच-समझकर दिए गए उपहार, घर में बनी मिठाइयाँ और साधारण सजावट भी प्रेम की उतनी ही सुंदर अभिव्यक्ति हो सकती हैं जितनी महँगी खरीदारी। अपनी आर्थिक क्षमता के अनुसार त्योहार मनाने से चिंताएँ कम होती हैं और उत्सव का आनंद भी बना रहता है।

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य का ध्यान रखना भी उतना ही जरूरी है। लगातार खरीदारी, देर रात तक तैयारियाँ, अत्यधिक सामाजिक कार्यक्रम और पर्याप्त आराम की कमी लोगों को थका हुआ तथा चिड़चिड़ा बना सकती है। पहले से योजना बनाना, घरेलू जिम्मेदारियाँ बाँटना और विश्राम के लिए समय निकालना उत्सव को अधिक सुखद बना सकता है। किसी को भी अपनी मानसिक शांति की कीमत पर हर कार्यक्रम में शामिल होने या सभी अपेक्षाएँ पूरी करने के लिए बाध्य नहीं होना चाहिए।

त्योहारों के दौरान परिवार के सदस्यों को उस अदृश्य श्रम को भी समझना चाहिए, जिसका बोझ अक्सर महिलाओं, बुजुर्गों या परिवार के कुछ जिम्मेदार सदस्यों पर पड़ता है। भोजन तैयार करना, घर की सफाई करना, सजावट करना और मेहमानों का स्वागत करना काफी मेहनत का काम है। जब जिम्मेदारियाँ उचित रूप से बाँटी जाती हैं, तो उत्सव अधिक समावेशी और सौहार्दपूर्ण बनते हैं। बच्चे छोटे-छोटे कामों में सहयोग कर सकते हैं और बड़े सदस्य घरेलू कार्यों को आपस में बाँट सकते हैं।

कुछ लोगों के लिए त्योहार भावनात्मक रूप से कठिन भी हो सकते हैं। जिन लोगों ने अपने प्रियजनों को खो दिया है, जो परिवार से दूर रहते हैं या अकेलेपन का अनुभव करते हैं, उनके लिए त्योहार खुशी के बजाय उदासी का कारण बन सकते हैं। आर्थिक कठिनाइयाँ, बीमारी और पारिवारिक विवाद भी इस पीड़ा को बढ़ा सकते हैं। ऐसे लोगों से हर समय प्रसन्न दिखाई देने की अपेक्षा करने के बजाय हमें उनके प्रति संवेदनशीलता, सहयोग और समझदारी दिखानी चाहिए। एक फोन कॉल, छोटी-सी मुलाकात या प्रेमपूर्ण शब्द किसी अकेले व्यक्ति के जीवन में बड़ा बदलाव ला सकते हैं।

शांतिपूर्ण उत्सव का एक महत्वपूर्ण पहलू जिम्मेदार व्यवहार भी है। अत्यधिक शोर, लापरवाही से वाहन चलाना, संसाधनों की बर्बादी और पर्यावरण प्रदूषण दूसरों की खुशियों को प्रभावित कर सकते हैं। हमें ऐसे तरीके अपनाने चाहिए जो पड़ोसियों का सम्मान करें, पशुओं की रक्षा करें, कचरा कम करें और पर्यावरण को सुरक्षित रखें। पर्यावरण-अनुकूल सजावट, अनावश्यक शोर से बचाव और अतिरिक्त भोजन जरूरतमंदों में बाँटना त्योहारों को अधिक संवेदनशील तथा टिकाऊ बना सकता है।

मन की शांति छोटे-छोटे व्यक्तिगत प्रयासों से भी प्राप्त की जा सकती है। गहरी साँस लेने, प्रार्थना, ध्यान या शांत चिंतन के लिए कुछ मिनट निकालना उत्सव की व्यस्तता के बीच मन को स्थिर रख सकता है। मोबाइल और सोशल मीडिया पर अत्यधिक समय बिताने के बजाय आमने-सामने बैठकर सार्थक बातचीत करना रिश्तों को मजबूत बनाता है। जो काम अधूरे रह गए हैं, केवल उन्हीं के बारे में सोचने के बजाय हमें अपने आसपास मौजूद लोगों और साथ मिलकर खुशियाँ मनाने के अवसरों के प्रति आभार व्यक्त करना चाहिए।

सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि परिवारों को समझना चाहिए कि रिश्ते, रीति-रिवाजों को पूरी तरह निभाने से अधिक मूल्यवान हैं। त्योहारों की तैयारियों के दौरान विचारों में मतभेद होना स्वाभाविक है, लेकिन धैर्य और सम्मानपूर्ण संवाद छोटी असहमतियों को बड़े विवादों में बदलने से रोक सकते हैं। दूसरों की बात ध्यान से सुनना, अनावश्यक आलोचना से बचना और अपूर्णताओं को स्वीकार करना पारिवारिक संबंधों में मधुरता बनाए रखता है।

त्योहार हमें अपने घरों से बाहर भी खुशियाँ बाँटने का अवसर देते हैं। अकेले रहने वाले बुजुर्गों से मिलना, जरूरतमंद परिवारों की सहायता करना, गरीबों में भोजन बाँटना और सामाजिक कल्याण के कार्यों में सहयोग देना उत्सव को गहरा अर्थ प्रदान करता है। जब हम उन लोगों के साथ खुशियाँ बाँटते हैं, जिन्हें जीवन में कम अवसर मिले हैं, तब त्योहार केवल सामाजिक आयोजन नहीं रहते, बल्कि मानवता और संवेदना के प्रतीक बन जाते हैं।

अंततः किसी त्योहार की सफलता मेहमानों की संख्या, सजावट पर किए गए खर्च या सोशल मीडिया पर साझा की गई तस्वीरों से नहीं मापी जानी चाहिए। इसका वास्तविक मूल्य उन मुस्कानों में है, जो हम दूसरों के चेहरे पर लाते हैं; उन रिश्तों में है, जिन्हें हम मजबूत बनाते हैं; और उस शांति में है, जिसे हम अपने मन में अनुभव करते हैं। शांत मन हमें छोटी-छोटी खुशियों का आनंद लेना सिखाता है, जबकि प्रेमपूर्ण परिवार हमें वह भावनात्मक सुरक्षा देता है, जो उत्सव को सार्थक बनाती है।

त्योहार आते-जाते रहते हैं, लेकिन उनसे जुड़ी यादें वर्षों तक हमारे साथ रहती हैं। इसलिए हमें सादगी से उत्सव मनाना चाहिए, जिम्मेदारियाँ साझा करनी चाहिए, दूसरों की परिस्थितियों का सम्मान करना चाहिए और मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी समय निकालना चाहिए। आइए, प्रतिस्पर्धा के स्थान पर करुणा, दिखावे के स्थान पर सादगी और अनावश्यक तनाव के स्थान पर कृतज्ञता को अपनाएँ।

त्योहारों की वास्तविक सुंदरता केवल उन दीपों में नहीं है, जो हमारे घरों को रोशन करते हैं, बल्कि उस प्रेम में है, जो हमारे हृदय को प्रकाशमान बनाता है। जब पारिवारिक एकता और मन की शांति उत्सव का आधार बनते हैं, तब प्रत्येक त्योहार खुशियों, सद्भाव और आशा का सच्चा संदेशवाहक बन जाता है।

डॉ. विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्राचार्य। शैक्षिक स्तंभकार। प्रख्यात शिक्षाविद् स्ट्रीट कौर चंद, एमएचआर, मलोट, पंजाब



धन और रिश्तों का दैनिक अंक ज्योतिष भविष्यफल

जानिए दिन की ऊर्जा • संभालिए धन • मजबूत बनाइए रिश्ते

18 अक्टूबर 2026 | दिन का अंक: 2 — सहयोग, संवेदनशीलता, साझेदारी, धैर्य और संतुलन

मूलांक 1

धन व करियर: दिन का अंक 2 आपकी मजबूत नेतृत्व ऊर्जा को नरम करता है और सहयोग को बढ़ाता है। आर्थिक या पेशेवर निर्णय में जिम्मेदारी लेने से पहले दूसरे दृष्टिकोण को सुनना लाभ देगा।
रिश्ते: आज अधिकार से अधिक धैर्य जरूरी है। बातचीत की पहल करें, लेकिन सामने वाले को बिना टोके अपनी भावनाएं कहने दें।
सावधानी: अधीरता, अहंकार में प्रतिक्रिया और उपयोगी सलाह को तुरंत नकारने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: सुनते हुए नेतृत्व करें—आत्मविश्वास के साथ सहयोग जोड़ें।

मूलांक 2

धन व करियर: आपके मूलांक 2 और दिन के अंक 2 की ऊर्जा एक-दूसरे को बहुत मजबूत करती है। अंतर्ज्ञान, संवेदनशीलता और साझेदारी बढ़ेगी। बातचीत और संयुक्त योजना के लिए अच्छा दिन है, लेकिन धन लगाने से पहले आंकड़े जांचें।
रिश्ते: भावनात्मक जुड़ाव प्रमुख रहेगा। नरम बातचीत विश्वास बढ़ा सकती है, लेकिन सामने वाले से हर भावना बिना बताए समझ लेने की अपेक्षा न करें।
सावधानी: अधिक सोचने, मूड में खर्च और आश्वासन पर अत्यधिक निर्भरता से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अंतर्ज्ञान पर भरोसा करें, स्पष्ट बोलें और एक स्वस्थ सीमा रखें।

मूलांक 3

धन व करियर: आपकी संवाद और रचनात्मक क्षमता को दिन 2 का सहयोगी स्वभाव समर्थन देता है। प्रस्ताव, प्रस्तुति या क्लाइंट बातचीत में तुरंत प्रभावित करने के बजाय प्रतिक्रिया लेकर सुधार करें।
रिश्ते: आज शब्दों का भावनात्मक प्रभाव अधिक होगा। मजाक सोच-समझकर करें और किसी अपने की सच्ची प्रशंसा करें।
सावधानी: लापरवाह वादे, सामाजिक खर्च और सामने वाले का मूड समझे बिना बोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अपने शब्दों से उत्साह बढ़ाएं और किसी के साथ मिलकर एक उपयोगी विचार बेहतर करें।

मूलांक 4

धन व करियर: दिन 2 आपकी व्यावहारिक योजना में धैर्यपूर्ण टीमवर्क जोड़ता है। बड़ा कदम अंतिम करने से पहले बजट, समझौते और जिम्मेदारियां किसी भरोसेमंद व्यक्ति के साथ जांचें।
रिश्ते: आपकी विश्वसनीयता महत्वपूर्ण है, लेकिन आज भावनात्मक गर्मजोशी भी उतनी ही जरूरी है। केवल कर्तव्य से नहीं, शब्दों से भी अपनापन दिखाएं।
सावधानी: कठोरता, मन में नाराजगी रखने और मदद लेने से इनकार करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: उपयोगी सहयोग स्वीकार करें और एक व्यावहारिक समझौता करें।

मूलांक 5

धन व करियर: दिन 2 आपकी तेज गति को थोड़ा धीमा करके बातचीत और विवरण पर ध्यान देने को कहता है। नेटवर्किंग लाभ दे सकती है, लेकिन योजना बदलने या खर्च से पहले शर्तें जांचें।
रिश्ते: स्वतंत्रता महत्वपूर्ण रहेगी, पर आज संवेदनशीलता भी जरूरी है। लोगों को अपनी योजना बताते रहें ताकि सहजता असुरक्षा न पैदा करे।
सावधानी: अचानक खरीदारी, अस्पष्ट संकेत और जल्दबाजी की प्रतिबद्धता से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: 'हाँ' कहने से पहले रुकें और अपनी योजना स्पष्ट बताएं।

मूलांक 6

धन व करियर: दिन 2 आपकी देखभाल की प्रकृति के साथ अच्छा मेल खाता है। साझेदारी, पारिवारिक धन और क्लाइंट संबंध धैर्य से बेहतर हो सकते हैं, लेकिन उदारता की सीमा रखें।
रिश्ते: अपनापन और निकटता को समर्थन मिलेगा। शांत बातचीत छोटी भावनात्मक दूरी को कम कर सकती है; तुरंत उत्तर के लिए दबाव न डालें।
सावधानी: जरूरत से ज्यादा देने, भावनात्मक खर्च और बदले में प्रशंसा की अपेक्षा से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: देखभाल करें, लेकिन हर व्यक्ति की खुशी की जिम्मेदारी स्वयं न लें।

मूलांक 7

धन व करियर: दिन 2 आपकी विश्लेषणात्मक प्रकृति में संवेदनशीलता जोड़ता है। महत्वपूर्ण आर्थिक या पेशेवर निर्णय से पहले भरोसेमंद व्यक्ति की राय नया दृष्टिकोण दे सकती है।
रिश्ते: आप चुप रहना पसंद कर सकते हैं, लेकिन आपकी दूरी को गलत समझा जा सकता है। सामने वाले से अनुमान लगाने की अपेक्षा करने के बजाय एक जरूरी भावना साझा करें।
सावधानी: संदेह, अत्यधिक विश्लेषण और संवाद टालने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: अंतर्ज्ञान की पुष्टि करें और एक शांत, ईमानदार बातचीत करें।

मूलांक 8

धन व करियर: दिन 2 आपकी मजबूत व्यावसायिक ऊर्जा में कूटनीति जोड़ता है। बातचीत और साझेदारी में दबाव के बजाय न्यायपूर्ण रवैया बेहतर परिणाम दे सकता है।
रिश्ते: आज नियंत्रण विरोध पैदा कर सकता है। समाधान या नियम बताने से पहले सामने वाले की चिंता सुनें।
सावधानी: शक्ति संघर्ष, कठोर शब्द और धन के माध्यम से दूसरों को नियंत्रित करने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: शक्ति के साथ संवेदनशीलता रखें और उचित मध्य मार्ग खोजें।

मूलांक 9

धन व करियर: दिन 2 आपकी तीव्र ऊर्जा को नरम करता है और सहयोग के साथ अधूरे विषय पूरे करने में मदद करता है। बड़ा नया कदम लेने से पहले लंबित मामला, गलतफहमी या संसाधन व्यवस्थित करें।
रिश्ते: करुणा बढ़ेगी, इसलिए क्षमा करना आसान हो सकता है। किसी अपने का साथ दें, लेकिन उसका पूरा भावनात्मक बोझ स्वयं न उठाएं।
सावधानी: अपराधबोध में खर्च, भावनात्मक प्रतिक्रिया और पुराने घाव दोबारा खोलने से बचें।
दिन बेहतर बनाएं: एक लंबित विषय शांति से पूरा करें और अपनी भावनात्मक सीमाएं सुरक्षित रखें।

कॉल / व्हाट्सऐप: 8750075550 | वेबसाइट: www.vediccodes.in | @vediccodes

Vediccodes - Your vibrations... our solutions

देवी की पूजा और स्त्री की दुर्दशा!

डॉ घनश्याम बादल



नवरात्र चल रहे हैं। मंदिरों में घंटाध्वनि है, घरों में दुर्गा सप्तशती पाठ हो रहे हैं, कन्याओं के पांव पखारे जा रहे हैं और मंचों से नारी शक्ति के जयकारे लग रहे हैं। देवी के नौ रूपों का महिमा का बखान तो ठीक है लेकिन देश में स्त्री की अस्मिता, सुरक्षा और सम्मान के सवाल पर समाज की धीमी धीमी आवाज बड़े सवाल खड़े करती है।

एक तरफ देवी के सामने सिर झुकाने की होड़ है, दूसरी तरफ जीवित स्त्री को झुकाने, दबाने और चुप कराने का सिलसिला जारी है। सवाल है कि हम शक्ति की आराधना कर रहे हैं या अपने पाखंड को धार्मिक आवरण पहना रहे हैं?

उत्तराखंड की मंत्री रेखा आर्य से जुड़ी वैवाहिक शिकायतों की खबरें इस विरोधाभास को और तीखा बनाती हैं। यदि सत्ता में बैठी एक महिला को भी अपने वैवाहिक संबंध में कथित शोषण, उत्पीड़न और धोखे के आरोप लेकर शिकायत दर्ज कराने की ज़रूरत पड़ती है, तो आम स्त्री की मुश्किलों का अनुमान लगाना कठिन नहीं। इन आरोपों की सच्चाई का फैसला जांच और न्यायिक प्रक्रिया से ही होना चाहिए लेकिन शिकायत का सामने आना ही उस सामाजिक व्यवस्था पर सवाल उठाता है, जिसमें विवाह को स्त्री के लिए सुरक्षा का प्रमाणपत्र मान लिया जाता है और उसके भीतर होने वाले कथित अन्याय को अक्सर घर की चारदीवारी में दफन कर देने की सलाह दी जाती है।

पद, प्रतिष्ठा और राजनीतिक रसूख किसी महिला को हर परिस्थिति में सुरक्षित नहीं बना सकते, तो उस स्त्री की स्थिति क्या होगी जिसके पास न प्रभाव है, न पैसा और न ही अपनी बात सुने जाने का भरोसा? उसके लिए न्याय की राह कितनी लंबी और अकेली होगी?

विडंबना देखिए कि जिस समय नवरात्र में कन्या पूजन के लिए छोटी बच्चियों को खोजा जाता है, उसी समाज में बच्चियों के यौन शोषण की खबरें हमें बार-बार शर्मसार करती हैं। जिस कन्या को देवी का रूप कहकर भोजन कराया जाता है, उसके लिए घर, स्कूल, सड़क और सार्वजनिक स्थान कितने सुरक्षित हैं? पूजा के दिन उसके पांव धोने वाले हाथ क्या शेष दिनों में उसकी स्वतंत्रता और इच्छा का सम्मान करते हैं? यदि बच्ची को अपनी ही दुनिया में भय के साथ जीना पड़े, तो कन्या पूजन की पवित्रता पर प्रश्न उठना स्वाभाविक है।

स्त्री के प्रति अपराधों की चर्चा करते समय आंकड़ों की शुद्धता भी जरूरी है। किसी अपराध के बढ़ने या घटने का दावा प्रमाणित आंकड़ों से होना चाहिए। लेकिन आंकड़ों की बहस से वह सच्चाई नहीं मिटती कि यौन हिंसा, घरेलू उत्पीड़न, पीछा करना, सार्वजनिक अपमान और महिलाओं की आवाज दबाने की घटनाएं समाज के सामने गंभीर चुनौती बनी हुई हैं। दर्ज मामलों की संख्या पूरी तस्वीर नहीं बताती; बदनामी, परिवार का दबाव, आर्थिक निर्भरता और पुलिस-न्याय व्यवस्था की लंबी प्रक्रिया अनेक महिलाओं को शिकायत करने से भी रोकती है।

और यह समस्या केवल घरों तक सीमित नहीं है। जन आंदोलनों में महिला पत्रकारों और आंदोलनकारी महिलाओं के साथ कथित दुर्व्यवहार, धक्का-मुक्की, मारपीट या दमन की तस्वीरें सामने आती हैं, तो लोकतंत्र का दावा भी कठघरे में खड़ा होता है। किसी आंदोलन से असहमति हो सकती है, उसकी मांगें अनुचित भी हो सकती हैं, लेकिन क्या इससे महिला पत्रकार के काम करने के अधिकार या प्रदर्शनकारी महिला की गरिमा को कुचलने का लाइसेंस मिल जाता है? कानून-व्यवस्था बनाए रखना प्रशासन की जिम्मेदारी है, अपमानित करना नहीं। वर्दी की ताकत का अर्थ नागरिक की आवाज दबाना नहीं, उसके अधिकारों की रक्षा करना है।

महिला की स्वतंत्रता का सवाल सत्ता और विपक्ष, दोनों की परीक्षा लेता है। विपक्ष में रहते हुए महिलाओं के सम्मान की दुहाई देना आसान है; सत्ता में आने पर उसी कसौटी पर खरा उतरना कठिन। किसी एक दल, विचारधारा या समुदाय को स्त्री के प्रति समूचे अन्याय का ठेकेदार बताकर बाकी समाज को निर्दोष नहीं ठहराया जा सकता। स्त्री के प्रति भेदभाव की जड़ें परिवार, परंपरा, राजनीति, बाजार और संस्थाओं तक फैली हैं। कहीं उसे परिवार की इज्जत के नाम पर बांधा जाता है, कहीं संस्कृति की रक्षा के नाम पर उसकी पसंद पर पहरा बैठाया जाता है और कहीं उसकी पीड़ा को राजनीतिक लाभ-हानि के तराजू पर तौला जाता है।

इसी पृष्ठभूमि में मेरठ का चर्चित नीले ड्रम वाला हत्याकांड भयावह सवालों के साथ सामने आता है। इस मामले में दो अभियुक्तों को फांसी की सजा सुनाए जाने की खबर ने अपराध की क्रूरता और न्याय की जरूरत पर ध्यान खींचा है। ऐसे मामलों में कठोर दंड की मांग स्वाभाविक है लेकिन यह भी याद रखना होगा कि किसी अपराध के बाद मृत्युदंड सुना दिया जाना अपने आप में महिलाओं की सुरक्षा की गारंटी नहीं बन जाता। न्यायिक फैसले का सम्मान अपनी जगह है; उससे आगे अपराध रोकने की सामाजिक और संस्थागत जिम्मेदारी भी उतनी ही बड़ी है। अपराध होने के बाद सजा देना न्याय है, मगर अपराध होने से पहले किसी को सुरक्षित रखना शासन और समाज की असली परीक्षा है।

हमारी समस्या यह भी है कि किसी जघन्य घटना पर कुछ दिनों तक आक्रोश उबलता है, टीवी पर बहसें होती हैं, सोशल मीडिया पर नारे चलते हैं और फिर अगली सनसनी पुरानी पीड़ा को ढक देती है। पीड़िता का नाम, चेहरा और दुख चर्चा का विषय बन जाता है, लेकिन उन परिस्थितियों पर गंभीर विचार नहीं होता जो हिंसा को जन्म देती हैं। अपराधी को फांसी देने की मांग करने वाला समाज अपने घर में बेटे को स्त्री के प्रति सम्मान सिखाने की जिम्मेदारी से बच नहीं सकता। कानून का भय आवश्यक है, पर संस्कार का अर्थ केवल धार्मिक अनुष्ठान नहीं; वह दूसरे मनुष्य की स्वतंत्रता और गरिमा को स्वीकार करना है।

नवरात्र का मूल संदेश शक्ति की उपासना है। दुर्गा का रूप अन्याय के सामने प्रतिरोध का प्रतीक है, महिषासुर-वध अत्याचार के विरुद्ध संघर्ष का रूपक है और स्त्री के भीतर शक्ति देखने की परंपरा उसे कमजोर मानने की मानसिकता को चुनौती देती है। फिर भी विडंबना यह है कि देवी को सर्वशक्तिमान मानने वाला समाज अपनी बेटी को अक्सर निर्णय लेने में अक्षम समझता है। दुर्गा की तलवार की आराधना होती है, लेकिन स्त्री के आत्मसम्मान की आवाज उठे तो उसे परिवार तोड़ने वाली, संस्कारहीन या विद्रोही कह दिया जाता है। देवी को शक्ति का अधिकार है, स्त्री को क्यों नहीं?

धर्म का मूल्य कर्म से तय होता है, कर्मकांड की भव्यता से नहीं। यदि नवरात्र के नौ दिनों में हम देवी के नौ रूपों की पूजा करें, लेकिन वर्ष के बाकी दिनों में स्त्री की इच्छा, सहमति, शिक्षा, संपत्ति, रोजगार और स्वतंत्र निर्णय के अधिकारों की उपेक्षा करें, तो हमारी भक्ति अधूरी ही नहीं, आत्मवंचना भी है। कन्या पूजन का सबसे बड़ा अर्थ किसी बच्ची के पांव धोना नहीं, यह सुनिश्चित करना है कि उसके सपनों पर पहरा न हो, उसके शरीर पर उसकी सहमति के बिना कोई अधिकार न जमाए और अन्याय होने पर उसे चुप रहने के लिए मजबूर न किया जाए।

निर्माण एवं विध्वंस गतिविधियों से उड़ने वाली धूल पर प्रशासन सख्त, नियमों की पालना अनिवार्य : डीसी

डीसी वर्षा खांगवाल ने निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण के लिए सीएक्यूएम के निर्देशों की पालना सुनिश्चित करने पर दिया जोर

बैरियर लगाकर निर्माण स्थल को ढकें, नियमित पानी का छिड़काव करें और निर्माण सामग्री का ढके हुए वाहनों में ही करें परिवहन

झज्जर, 17 अक्टूबर

जिला में वायु प्रदूषण पर प्रभावी नियंत्रण और आमजन को स्वच्छ एवं स्वस्थ वातावरण उपलब्ध कराने के लिए जिला प्रशासन द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। डीसी वर्षा खांगवाल ने निर्माण एवं विध्वंस (सी एंड डी) गतिविधियों से उत्पन्न होने वाली धूल पर नियंत्रण के लिए संबंधित विभागों और निर्माण कार्यों से जुड़े लोगों को निर्धारित नियमों की सख्ती से पालना सुनिश्चित करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि निर्माण स्थलों से उड़ने वाली धूल वायु प्रदूषण बढ़ाने के साथ-साथ लोगों के स्वास्थ्य पर भी प्रतिकूल प्रभाव डालती है, इसलिए धूल नियंत्रण के सभी आवश्यक उपाय अपनाना अनिवार्य है।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि निर्माण स्थलों पर धूल को नियंत्रित करने के लिए वायु गुणवत्ता प्रबंधन आयोग (सीएक्यूएम) द्वारा जारी निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए। निर्माण स्थल को चारों ओर से उचित बैरिकेडिंग के साथ कवर किया जाए तथा निर्माण सामग्री को खुले में रखने के बजाय ढककर रखा जाए। इसके अतिरिक्त निर्माण स्थल, आंतरिक रास्तों और खुले क्षेत्रों में नियमित रूप से पानी का छिड़काव किया जाए, ताकि धूल के कण हवा में न फैलें।



निर्माण सामग्री का परिवहन ढके हुए वाहनों में करना जरूरी

डीसी ने निर्देश दिए कि रेत, मिट्टी, बजरी और निर्माण एवं विध्वंस से निकलने वाले मलबे का परिवहन पूरी तरह ढके हुए वाहनों में किया जाए। इससे सड़कों पर निर्माण सामग्री गिरने और धूल उड़ने की समस्या को कम किया जा सकेगा। उन्होंने निर्माण स्थलों से बाहर निकलने वाले वाहनों के पहियों की सफाई के लिए आवश्यक प्रबंध करने तथा आसपास की सड़कों को साफ रखने पर भी जोर दिया।

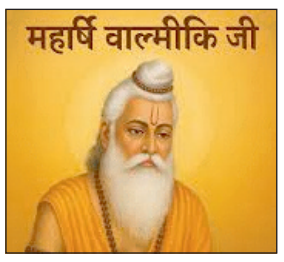
पीएम 10 और पीएम 2.5 की निगरानी पर जोर

डीसी ने कहा कि वायु प्रदूषण को नियंत्रित करने के लिए निर्माण स्थलों पर धूल के स्तर की निगरानी भी जरूरी है। इसके लिए लो-कॉस्ट पीएम 10 और पीएम 2.5 सेंसर के माध्यम से प्रदूषण स्तर की निगरानी करने तथा बड़े निर्माण स्थलों पर सीसीटीवी और पीटीजेड कैमरों के माध्यम से गतिविधियों पर नज़र रखने के निर्देशों की पालना सुनिश्चित की जाए। उन्होंने कहा कि पीएम 10 और पीएम 2.5 के बढ़ते स्तर से सांस संबंधी समस्याएं, खांसी, आंखों में जलन और हृदय संबंधी बीमारियों का खतरा बढ़ सकता है। इसलिए निर्माण गतिविधियों के दौरान पर्यावरण संरक्षण और जनस्वास्थ्य को प्राथमिकता देना आवश्यक है। उन्होंने संबंधित विभागों को निर्देश दिए कि निर्माण स्थलों पर धूल नियंत्रण के उपायों की नियमित निगरानी करें और नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई सुनिश्चित करें।

डीसी वर्षा खांगवाल ने कहा कि स्वच्छ हवा और स्वस्थ वातावरण बनाए रखना प्रशासन के साथ-साथ प्रत्येक नागरिक की सामूहिक जिम्मेदारी है। निर्माण कार्यों में निर्धारित मानकों की पालना करके धूल प्रदूषण को कम किया जा सकता है और झज्जर जिला को स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाया जा सकता है।

कुलेरी में भगवान वाल्मीकि प्रकट दिवस एवं मूर्ति स्थापना समारोह 25 अक्टूबर को, राज्यसभा सांसद सुभाष बराला करेंगे शिरकत

परिवहन विशेष न्यूज



हरियाणा/हिसार (राजेश सलूजा) भगवान वाल्मीकि प्रकट दिवस एवं मूर्ति स्थापना समारोह तथा पारितोषिक वितरण समारोह का आयोजन 25 अक्टूबर 2026, रविवार को गांव कुलरी (हिसार) स्थित भगवान वाल्मीकि पुस्तकालय में किया जाएगा। कार्यक्रम सुबह 10 बजे शुरू होगा। समारोह में राज्यसभा सांसद सुभाष बराला मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत करेंगे, जबकि हरियाणा सरकार के पूर्व चेयरमैन एवं उकलाना निवासी श्रीनिवास गोयल कार्यक्रम की अध्यक्षता करेंगे।

गांव बाड़ों पट्टी के सरपंच पवन शास्त्री ने कार्यक्रम की जानकारी देते हुए बताया कि भगवान वाल्मीकि जी के प्रकट दिवस एवं मूर्ति स्थापना समारोह को लेकर तैयारियां की जा रही हैं। कार्यक्रम में भगवान वाल्मीकि जी के आदर्शों, शिक्षाओं और सामाजिक समरसता के संदेश को जन-जन तक पहुंचाने के साथ-साथ पारितोषिक वितरण समारोह भी आयोजित किया जाएगा।

उन्होंने बताया कि समारोह में विशिष्ट अतिथियों के रूप में पूर्व राज्यसभा सांसद डॉ. डी.पी. वत्स, एचएसएससी सदस्य साधुराम जाखड़, कुलेरी के जिला पार्षद अजय सिंह धुंधवाल, चेयरमैन प्रतिनिधि ब्लॉक समिति अग्रोहा के सदस्य आनंद काजला, कुलेरी के सरपंच राजीव सहारण तथा उद्योगपति बहादुरगढ़ प्रवीण जिंदल जो मूल निवासी कुलेरी है निवासी अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहेंगे।

पवन शास्त्री ने क्षेत्रवासियों से अपील की कि वे अधिक से अधिक संख्या में समारोह में पहुंचकर भगवान वाल्मीकि जी का आशीर्वाद प्राप्त करें और कार्यक्रम की शोभा बढ़ाएं।

प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के खिलाफ प्रशासन की कार्रवाई





10 चालान कर 46 हजार रुपये का जुर्माना लगाया

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में चलाया गया निरीक्षण अभियान, नियमों का उल्लंघन करने वाले दुकानदारों पर की गई कार्रवाई

झज्जर, 17 अक्टूबर

जिला में पर्यावरण संरक्षण और प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक कैरी बैग के उपयोग एवं बिक्री पर रोक लगाने के उद्देश्य से जिला प्रशासन द्वारा निरंतर प्रयास किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में झज्जर में प्रतिबंधित प्लास्टिक कैरी बैग के विरुद्ध विशेष निरीक्षण अभियान चलाया गया। अभियान के दौरान नियमों का उल्लंघन पाए जाने पर दुकानदारों के कुल 10 चालान किए गए और 46,000 रुपये की जुर्माना राशि निर्धारित की गई।

यह संयुक्त कार्रवाई हरियाणा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. सुनील श्योराण के निर्देशन में बोर्ड के जेई सोनू बिधान तथा नगर परिषद झज्जर के सेनेटरी इंस्पेक्टर आनंद मलिक द्वारा की गई। निरीक्षण अभियान का उद्देश्य प्रतिबंधित प्लास्टिक कैरी बैग के इस्तेमाल और बिक्री पर प्रभावी रोक लगाना तथा दुकानदारों को पर्यावरण संरक्षण से जुड़े नियमों के प्रति जागरूक करना था।

10 चालान कर निर्धारित किया 46 हजार रुपये का जुर्माना

क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. श्योराण ने बताया कि निरीक्षण के दौरान नियमों का उल्लंघन करने वाले दुकानदारों के विरुद्ध नियमानुसार कार्रवाई करते हुए अलग-अलग राशि के चालान किए गए। इनमें 10,000 रुपये के चार चालान कर 40,000 रुपये, 1,500 रुपये के तीन चालान कर 4,500 रुपये तथा 500 रुपये के तीन चालान कर 1,500 रुपये की जुर्माना राशि निर्धारित की गई। इस प्रकार अभियान के दौरान कुल 10 चालान किए गए और कुल 46,000 रुपये का जुर्माना निर्धारित किया गया। डॉ सुनील ने स्पष्ट किया कि प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक के उपयोग एवं बिक्री पर रोक लगाने के लिए निरीक्षण और जागरूकता संबंधी गतिविधियां महत्वपूर्ण हैं।

पर्यावरण संरक्षण के नियमों की पालना करें दुकानदार

क्षेत्रीय अधिकारी डॉ. सुनील श्योराण ने दुकानदारों एवं व्यापारियों से अपील की कि वे प्रतिबंधित सिंगल यूज प्लास्टिक कैरी बैग का उपयोग और बिक्री न करें तथा पर्यावरण संरक्षण से संबंधित नियमों का पूरी तरह पालन करें। उन्होंने कहा कि प्लास्टिक प्रदूषण पर्यावरण के लिए गंभीर चुनौती है। इसे कम करने के लिए प्रशासनिक कार्रवाई के साथ-साथ आमजन की सक्रिय भागीदारी भी आवश्यक है।

उन्होंने दुकानदारों से ग्राहकों को प्लास्टिक कैरी बैग के स्थान पर पर्यावरण के अनुकूल विकल्प अपनाने के लिए प्रोत्साहित करने का आह्वान किया। साथ ही आमजन से भी खरीदारी के दौरान कपड़े या अन्य पुनः उपयोग किए जा सकने वाले थैलों का इस्तेमाल करने की अपील की।

जनसहयोग से बनेगा स्वच्छ और प्रदूषण मुक्त वातावरण

डीसी वर्षा खांगवाल के मार्गदर्शन में पर्यावरण संरक्षण के लिए किए जा रहे प्रयासों के तहत नागरिकों और व्यापारियों की सहभागिता को महत्वपूर्ण बताया गया। प्रतिबंधित प्लास्टिक के उपयोग पर रोक लगाने के लिए नियमों की पालना सुनिश्चित करने के साथ लोगों को जागरूक करना भी जरूरी है।

अधिकारियों ने आमजन से अपील की कि वे अपने दैनिक जीवन में प्लास्टिक का उपयोग कम करें, प्रतिबंधित प्लास्टिक कैरी बैग से दूरी बनाएं और स्वच्छता बनाए रखने में सहयोग दें। सामूहिक प्रयासों और पर्यावरण के अनुकूल आदतों को अपनाकर ही प्लास्टिक प्रदूषण को कम किया जा सकता है तथा आने वाली पीढ़ियों के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित पर्यावरण सुनिश्चित किया जा सकता है।

दुर्गा सप्तमी पर माता भीमेश्वरी देवी के दर्शन के लिए उमड़ा श्रद्धालुओं का सैलाब

बेरी में मुख्य मेले के दौरान लाखों श्रद्धालुओं ने किए माता के दर्शन, एसडीएम रेणुका नांदल ने व्यवस्थाओं का जायजा लेकर अधिकारियों को दिए निर्देश श्रद्धालुओं की सुविधा, सुरक्षा और भीड़ प्रबंधन को लेकर प्रशासन सतर्क, सभी व्यवस्थाएं सुचारू रखने पर जोर



बेरी (झज्जर), 17 अक्टूबर

धर्मनगरी बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में शारदीय नवरात्र के अवसर पर आयोजित मुख्य मेले में दुर्गा सप्तमी के दिन लाखों श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। सुबह से ही मंदिर में श्रद्धालुओं की भारी भीड़ उमड़नी शुरू हो गई और माता के दर्शन के लिए लंबी कतारें लगी रहीं। श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए उपमंडल प्रशासन की ओर से विभिन्न व्यवस्थाएं सुनिश्चित की गईं।

डीसी वर्षा खांगवाल के कुशल मार्गदर्शन में आयोजित मेले की व्यवस्था की जिम्मेदारी एसडीएम रेणुका नांदल द्वारा प्रभावी रूप से निभाई जा रही है। मुख्य मेले के दौरान एसडीएम बेरी रेणुका नांदल ने मेला स्थल का दौरा कर व्यवस्थाओं का जायजा लिया। उन्होंने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिए कि श्रद्धालुओं की अधिक आवाजाही को देखते हुए सभी व्यवस्थाएं व्यवस्थित रखी जाएं, ताकि किसी भी श्रद्धालु को परेशानी का सामना न करना पड़े। उन्होंने भीड़ प्रबंधन, सुरक्षा व्यवस्था, पेयजल, स्वच्छता और अन्य आवश्यक सुविधाओं पर विशेष ध्यान देने के निर्देश दिए।

श्रद्धालुओं की सुविधा और सुरक्षा सर्वोच्च प्राथमिकता

एसडीएम रेणुका नांदल ने कहा कि माता भीमेश्वरी देवी के मुख्य मेले में बड़ी संख्या में श्रद्धालु पहुंचते हैं। ऐसे में सभी संबंधित विभाग आपसी तालमेल के साथ कार्य करें और अपनी जिम्मेदारियों का पूरी तत्परता से निर्वहन करें। उन्होंने अधिकारियों को निर्देश दिए कि मंदिर परिसर और मेला क्षेत्र में श्रद्धालुओं की आवाजाही सुचारू बनाए रखी जाए तथा किसी भी प्रकार की अव्यवस्था की स्थिति से निपटने के लिए सतर्क रहें। उन्होंने कहा कि श्रद्धालुओं को दर्शन के दौरान बेहतर सुविधाएं उपलब्ध करवाना प्रशासन की प्राथमिकता है। इसके लिए संबंधित अधिकारी लगातार व्यवस्थाओं की निगरानी करें और आवश्यकता के अनुसार तुरंत कदम उठाएं।

साफ-सफाई और आवश्यक सुविधाओं पर विशेष जोर

एसडीएम ने मेला स्थल पर स्वच्छता बनाए रखने, पेयजल की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित करने तथा चिकित्सा सहायता सहित अन्य जरूरी सुविधाओं को सुचारू रखने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि मेले में आने वाले श्रद्धालुओं को किसी भी प्रकार की असुविधा न हो, इसके लिए सभी विभाग पूरी जिम्मेदारी के साथ कार्य करें।

प्रशासन की ओर से श्रद्धालुओं से भी अपील की गई कि वे व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करें और सुरक्षा संबंधी निर्देशों का पालन करते हुए शांतिपूर्वक माता के दर्शन करें।

बेरी मेले में विधिक सेवा प्राधिकरण से जुड़ी योजनाओं से रूबरू हो रहे श्रद्धालु

माता भीमेश्वरी देवी मंदिर परिसर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के स्टाल पर श्रद्धालुओं को पीएलवी दे रहे कानूनी अधिकारों और योजनाओं की जानकारी राष्ट्रीय लोक अदालत, निःशुल्क कानूनी सहायता और मध्यस्थता केंद्र सहित विभिन्न विधिक सेवाओं के प्रति किया जागरूक

बेरी (झज्जर), 17 अक्टूबर।

धर्मनगरी बेरी स्थित माता भीमेश्वरी देवी मंदिर में शारदीय नवरात्र के अवसर पर आयोजित मुख्य मेले में शनिवार को दुर्गा सप्तमी के दिन लाखों श्रद्धालुओं ने माता के दर्शन कर पूजा-अर्चना की। इस दौरान जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से मंदिर परिसर में स्थापित कानूनी सहायता शिविर में प्राधिकरण के पीएलवी द्वारा श्रद्धालुओं विभिन्न कानूनी अधिकारों, सरकारी योजनाओं और निःशुल्क विधिक सेवाओं के बारे में जानकारी दी गई।

जिला एवं सत्र न्यायाधीश श्री राजकुमार यादव के मार्गदर्शन तथा मुख्य न्यायिक मजिस्ट्रेट एवं जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव श्री विशाल के निर्देशानुसार आमजन को कानूनी रूप से जागरूक करने के उद्देश्य से मेले में यह स्टॉल लगाया गया है। इसके माध्यम से श्रद्धालुओं को सरल भाषा में कानूनी प्रावधानों और उपलब्ध विधिक सहायता सेवाओं के बारे में समझाया जा रहा है, ताकि वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होकर जरूरत पड़ने पर इन सेवाओं का लाभ उठा सकें।

विभिन्न कानूनी योजनाओं की दी जानकारी

स्टाल पर श्रद्धालुओं को राष्ट्रीय लोक अदालत, स्थायी लोक अदालत, सामुदायिक मध्यस्थता केंद्र, निःशुल्क कानूनी सहायता और जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की अन्य योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई। उन्हें बताया गया कि कानूनी सहायता के माध्यम से जरूरतमंद व्यक्ति अपनी समस्याओं के समाधान के लिए उचित मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं।



कानूनी जागरूकता बढ़ाने में निभा रहीं अहम भूमिका

बाहर वाले मंदिर परिसर में जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की पीएलवी कर्मजीत, सरोज देवी, नवीन रानी, प्रेमवती ने श्रद्धालुओं को विभिन्न विधिक सेवाओं की जानकारी दी। उन्होंने आमजन को अपने कानूनी अधिकारों के प्रति जागरूक रहने और जरूरत पड़ने पर प्राधिकरण की ओर से उपलब्ध करवाई जाने वाली निःशुल्क कानूनी सहायता का लाभ उठाने के लिए प्रेरित किया। इस पहल का उद्देश्य आमजन तक कानूनी जानकारी पहुंचाना और न्याय संबंधी सेवाओं को अधिक सुलभ बनाना है।

दशहरा पर्व पर चप्पे-चप्पे पर रहेगी प्रशासन की नजर : जिलाधीश

झज्जर, बेरी, दुजाना और बहादुरगढ़ में रावण दहन के दौरान सुरक्षा व कानून व्यवस्था संभालेंगे अधिकारी

20 अक्टूबर को सुबह 11 बजे से कार्यक्रम संपन्न होने तक ड्यूटी पर रहेंगे मजिस्ट्रेट

झज्जर, 17 अक्टूबर

दशहरा पर्व पर जिला में शांतिपूर्ण माहौल बनाए रखने और रावण दहन कार्यक्रमों के दौरान सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने के लिए जिला प्रशासन ने व्यापक प्रबंध किए हैं। जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने 20 अक्टूबर को आयोजित होने वाले दशहरा कार्यक्रमों के मद्देनजर चार ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किए हैं। नोडल अधिकारी सुबह 11 बजे से रावण दहन कार्यक्रम संपन्न होने तक अपने-अपने निर्धारित क्षेत्रों में तैनात रहकर व्यवस्थाओं की निगरानी करेंगे।

जिला में झज्जर शहर, बेरी कस्बे, गांव दुजाना में नया जोहड़ धानक मोहल्ला के पास तथा बहादुरगढ़ शहर में रावण दहन कार्यक्रम आयोजित किए जाएंगे। इन आयोजनों में आसपास के ग्रामीण क्षेत्रों और शहरों से बड़ी संख्या में लोगों के पहुंचने की संभावना है। इसे देखते हुए प्रशासन ने सुरक्षा, भीड़ प्रबंधन और यातायात व्यवस्था को सुचारू बनाए रखने के लिए संबंधित अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए हैं।

जिलाधीश वर्षा खांगवाल ने कहा कि झज्जर में नगर परिषद के उपमंडल अभियंता सुनील को ड्यूटी मजिस्ट्रेट नियुक्त किया गया है। वहीं बहादुरगढ़ में लोक निर्माण विभाग के उपमंडल अभियंता मुकेश शर्मा, बेरी में लोक निर्माण विभाग के उपमंडल अभियंता अजय कुमार तथा दुजाना में पंचायती राज विभाग के उपमंडल अभियंता ईश्वेन्द्र को ड्यूटी मजिस्ट्रेट की जिम्मेदारी सौंपी गई है।

नियुक्त ड्यूटी मजिस्ट्रेट संबंधित पुलिस अधिकारियों के साथ समन्वय स्थापित कर अपने-अपने क्षेत्रों में गश्त करेंगे। इस दौरान भीड़ की आवाजाही, यातायात और कानून व्यवस्था पर विशेष नजर रखी जाएगी। अधिकारियों को निर्देश दिए गए हैं कि किसी भी अप्रिय घटना की आशंका को देखते हुए सतर्क रहें और आवश्यकता पड़ने पर तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करें। सभी अधिकारी समय-समय पर अपने उच्च अधिकारियों को स्थिति की जानकारी भी देंगे।

एसडीएम होंगे अपने-अपने उपमंडल के समग्र प्रभारी

जारी आदेश के अनुसार, झज्जर, बहादुरगढ़ और बेरी के उपमंडल मजिस्ट्रेट अपने-अपने उपमंडल में संपूर्ण व्यवस्था के समग्र प्रभारी होंगे। जिला प्रशासन का उद्देश्य दशहरा पर्व को शांतिपूर्ण और सुरक्षित माहौल में संपन्न करवाना तथा कार्यक्रमों में शामिल होने वाले लोगों की सुरक्षा सुनिश्चित करना है। प्रशासन ने आमजन से भी व्यवस्था बनाए रखने में सहयोग करने की अपील की है।

खनन की अंधी दौड़ में जंगल-पहाड़ संकट में, आदिवासी समाज के भविष्य पर सवाल

सुंदरगढ़ के कोइड़ा से लेकर राज्य के अन्य खनिज क्षेत्रों तक पर्यावरणीय संतुलन और स्थानीय अधिकारों की रक्षा बड़ी चुनौती; पांच वर्षों में 12,700 हेक्टेयर से अधिक वनभूमि गैर-वन उपयोग के लिए हस्तांतरित





रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र राउरकेला

ओडिशा के खनिज बहुल सुंदरगढ़ जिले में खनन का विस्तार आर्थिक विकास की तस्वीर जरूर प्रस्तुत करता है, लेकिन इसके साथ जंगलों, पहाड़ियों, जलस्रोतों और आदिवासी समुदायों की पारंपरिक आजीविका पर पड़ने वाले प्रभावों को नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। कोइड़ा और आसपास के क्षेत्रों में प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को लेकर सबसे बड़ा सवाल यही है कि खनिज संपदा से होने वाली समृद्धि के बीच स्थानीय समाज और पर्यावरण को कितनी सुरक्षा मिल रही है।

वनभूमि हस्तांतरण के आंकड़े चिंताजनक ओडिशा में वित्त वर्ष 2021-22 से 2025-26 के दौरान खनन, उद्योग, सड़क और अन्य विकास परियोजनाओं के लिए लगभग 12,794 हेक्टेयर वनभूमि गैर-वन उपयोग के लिए हस्तांतरित की गई। रिपोर्ट में बोनाई वन प्रभाग में 693 हेक्टेयर वनभूमि हस्तांतरण का भी उल्लेख है। ये आंकड़े पूरे राज्य से संबंधित हैं, केवल सुंदरगढ़ जिले से नहीं। फिर भी खनिज क्षेत्रों में विकास और वन संरक्षण के बीच संतुलन की चुनौती स्पष्ट होती है।

अवैध खनन पर भी उठ चुके हैं सवाल सुंदरगढ़ जिले के हेमगीर और कोइड़ा तहसीलों में कथित बड़े पैमाने पर अवैध खनन के मामलों को लेकर मई 2025 में मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने सतर्कता जांच के आदेश दिए थे। प्रशासनिक कार्रवाई के दौरान वन क्षेत्रों में अवैध खनन से जुड़े गड्ढे और कोयले के भंडार भी सामने आए थे। यह घटनाक्रम खनन गतिविधियों की निगरानी और जवाबदेही मजबूत करने की जरूरत बताता है।

खनिज राजस्व का लाभ प्रभावित गांवों तक पहुंचे जिला खनिज प्रतिष्ठान (डीएमएफ) का उद्देश्य खनन प्रभावित लोगों और क्षेत्रों के कल्याण के लिए धन उपलब्ध कराना है। इसके तहत पेयजल, स्वास्थ्य, शिक्षा, प्रदूषण नियंत्रण और आजीविका जैसे क्षेत्रों को प्राथमिकता दी जाती है। अब जरूरत इस बात की है कि सुंदरगढ़ के प्रभावित गांवों में इन योजनाओं के क्रियान्वयन, खर्च और वास्तविक लाभार्थियों का पारदर्शी आकलन हो।

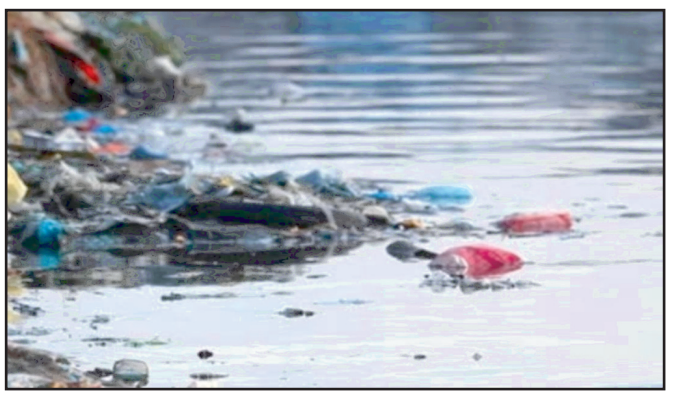
जंगलों पर निर्भर आदिवासी परिवारों के लिए वन उपज, खेती और जलस्रोत जीवन का आधार हैं। इसलिए खनन परियोजनाओं की पर्यावरणीय शर्तों, पुनर्वनीकरण, पुनर्वास तथा स्थानीय अधिकारों की नियमित समीक्षा जरूरी है।

विकास जरूरी है, लेकिन विनाश की कीमत पर नहीं। सरकार और प्रशासन को सुनिश्चित करना होगा कि खनिज संपदा से मिलने वाला आर्थिक लाभ स्थानीय लोगों के जीवन में सुधार लाए और आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रकृति की विरासत भी सुरक्षित रहे।

कारो नदी का पानी फिर काला, 8,500 परिवारों की जलापूर्ति पर मंडराया खतरा

औद्योगिक अपशिष्ट से प्रदूषण की आशंका, एक पखवाड़े में दूसरी घटना; जांच और नमूना परीक्षण तक सीमित कार्रवाई पर प्रशासन की जवाबदेही सवालों के घेरे में

रिपोर्ट डा राजकुमार यादव परिवहन विशेष समाचार पत्र बड़बिल



ओडिशा की कारो नदी का पानी एक बार फिर काला पड़ने और दुर्गंध फैलने की घटना ने औद्योगिक प्रदूषण नियंत्रण की व्यवस्था पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। शुक्रवार सुबह नदी के पानी का रंग अचानक बदलने के बाद नहाने पहुंचे लोग घबराकर बाहर निकल आए। मामला इसलिए भी गंभीर है, क्योंकि इसी नदी से बड़बिल नगर के 15 वार्डों के लगभग 8,500 परिवारों को जलापूर्ति होती है। बलानी टाउनशिप को भी इसी जलस्रोत से पानी दिया जाता है।

सितंबर के बाद अक्टूबर में दोबारा घटना स्थानीय जानकारों के अनुसार, 30 सितंबर को भी कारो नदी में औद्योगिक अपशिष्ट मिलने और पानी काला पड़ने की शिकायत सामने आई थी। इसके बाद एक अक्टूबर को ओडिशा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की केन्दुझर क्षेत्रीय टीम ने केन्दुडीही, लरसदा और मटकामबेड़ा से पानी के नमूने एकत्र कर भुवनेश्वर के पाटिया स्थित प्रयोगशाला भेजे थे। लेकिन कुछ ही समय के भीतर दोबारा ऐसी घटना सामने आना निगरानी व्यवस्था की प्रभावशीलता पर सवाल खड़ा करता है।

16 अक्टूबर को वाटको के जोड़ा कार्यालय ने पत्र संख्या 4316 के माध्यम से प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड के क्षेत्रीय कार्यालय को मामले से अवगत कराया। वाटको अधिकारियों ने सांताबहाल के निकट कारोबाकी आरक्षित वन क्षेत्र के पास स्थित इंटेक वेल से पानी का नमूना लेकर जांच के लिए भेजा है। हालांकि, नमूनों की अंतिम जांच रिपोर्ट और प्रदूषण के वास्तविक स्रोत की पुष्टि अभी आवश्यक है।

कागजी जांच से आगे बढ़े कार्रवाई सबसे गंभीर सवाल यह है कि सितंबर के अंत में शिकायत सामने आने के बाद भी नदी के पानी का रंग दोबारा कैसे बदल गया। यदि औद्योगिक अपशिष्ट के सीधे नदी में छोड़े जाने की आशंका सही साबित होती है, तो यह केवल पर्यावरणीय लापरवाही नहीं, बल्कि हजारों परिवारों के स्वास्थ्य और सुरक्षित पेयजल के अधिकार से जुड़ा मामला है।

ओडिशा राज्य प्रदूषण नियंत्रण बोर्ड की जिम्मेदारी केवल नमूने एकत्र करने तक सीमित नहीं है। बोर्ड के आधिकारिक विवरण के अनुसार, जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम, 1974 के तहत जल प्रदूषण की रोकथाम और नियंत्रण उसकी प्रमुख जिम्मेदारियों में शामिल हैं।

प्रशासन से जवाबदेही तय करने की मांग अब आवश्यक है कि प्रभावित स्थलों और संदिग्ध औद्योगिक निकास बिंदुओं की तत्काल जांच हो, जांच रिपोर्ट सार्वजनिक की जाए तथा दोषी इकाइयों की पहचान होने पर कानून के अनुसार कठोर कार्रवाई की जाए। साथ ही, जलापूर्ति के स्रोत की गुणवत्ता सुनिश्चित करते हुए नागरिकों को स्पष्ट जानकारी दी जाए कि पानी पीने योग्य है या नहीं।

सरकार और स्थानीय प्रशासन को बताना होगा कि पिछली शिकायत पर क्या कार्रवाई हुई और दोबारा ऐसी स्थिति रोकने के लिए क्या कदम उठाए गए। नदी का पानी काला पड़ने के बाद केवल नमूने भेजना पर्याप्त नहीं; जनता को सुरक्षित पानी और प्रदूषण से मुक्ति दिलाना ही प्रशासन की असली परीक्षा है।

न्यायिक अधिकारियों और अधिवक्ताओं में बेहतर तालमेल प्रभावी न्याय व्यवस्था की कुंजी : डॉ. परमिंदर कौर

जिला बार एसोसिएशन ने अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश डॉ. परमिंदर कौर को भावभीनी विदाई देकर किया सम्मानित

हिसार/हरियाणा, नरेश गुणपाल

जिला बार एसोसिएशन की ओर से शनिवार को जिला न्यायालय परिसर स्थित बार रूम में अतिरिक्त जिला एवं सत्र न्यायाधीश एवं प्रधान न्यायाधीश, परिवार न्यायालय, हिसार डॉ. परमिंदर कौर के सम्मान में विदाई समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता जिला बार एसोसिएशन के प्रधान प्रदीप सिंह बाजिया ने की, जबकि मंच संचालन एसोसिएशन के सचिव समीर सिहाग ने किया।

समारोह में जिला एवं सत्र न्यायाधीश अल्का मलिक सहित अन्य न्यायिक अधिकारियों और अधिवक्ताओं ने डॉ. परमिंदर कौर को भावभीनी विदाई दी और उनके भावी जीवन एवं आगामी दायित्वों के लिए शुभकामनाएं व्यक्त कीं।

आपसी सहयोग और समन्वय से मजबूत होती है न्याय व्यवस्था

अपने संबोधन में डॉ. परमिंदर कौर भावुक नजर आईं। उन्होंने कहा कि न्यायिक अधिकारियों और अधिवक्ताओं के बीच बेहतर तालमेल, आपसी सहयोग तथा समन्वय एक सुदृढ़ और प्रभावी न्याय व्यवस्था के लिए बेहद जरूरी है। उन्होंने कहा कि हिसार बार के अधिवक्ताओं से उन्हें हमेशा सहयोग और सकारात्मक समर्थन मिला, जिसके लिए वह बार के सभी सदस्यों की आभारी हैं। उन्होंने कविता के माध्यम से भी अपनी भावनाएं व्यक्त कीं, जिससे समारोह का माहौल भावनात्मक और आत्मीय हो गया।

अल्का मलिक ने न्यायिक सेवाओं की सराहना की

जिला एवं सत्र न्यायाधीश अल्का मलिक ने डॉ. परमिंदर कौर के न्यायिक कार्यकाल की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने न्यायिक अधिकारी के रूप में अपने दायित्वों का निष्ठापूर्वक निर्वहन किया। इसके साथ ही समय-समय पर सौंपी गई विभिन्न प्रशासनिक जिम्मेदारियों को भी पूरी लगन और कुशलता से निभाया। उन्होंने डॉ. परमिंदर कौर के कार्यों की प्रशंसा करते हुए उनके उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

पारस्परिक सम्मान और विश्वास न्याय व्यवस्था की ताकत : बाजिया

जिला बार एसोसिएशन के प्रधान प्रदीप सिंह बाजिया ने कहा कि न्यायिक अधिकारियों और अधिवक्ताओं के बीच पारस्परिक सम्मान, विश्वास और सहयोग न्याय व्यवस्था की गरिमा बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। उन्होंने डॉ. परमिंदर कौर के प्रति सम्मान व्यक्त करते हुए उनके उत्तम स्वास्थ्य, सुखद भविष्य और निरंतर सफलता की कामना की।



समारोह के दौरान जिला बार एसोसिएशन के उपप्रधान राहुल सिंह, सह सचिव साहिल मदेरणा और कोषाध्यक्ष आशा रानी बाल्यान ने डॉ. परमिंदर कौर को स्मृति चिह्न भेंट कर सम्मानित किया। वहीं, महिला अधिवक्ताओं ने उन्हें शॉल भेंट कर सम्मान एवं आत्मीयता प्रकट की।

एसोसिएशन के सचिव समीर सिहाग ने उपस्थित न्यायिक अधिकारियों और अधिवक्ताओं का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि इस प्रकार के आयोजन न्यायिक समुदाय के बीच सौहार्दपूर्ण संबंधों को मजबूत करने तथा आपसी सम्मान और सहयोग की परंपरा को आगे बढ़ाने का अवसर प्रदान करते हैं।

समारोह सौहार्दपूर्ण और भावनात्मक वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में युवा एवं वरिष्ठ अधिवक्ता तथा न्यायिक अधिकारी उपस्थित रहे।

प्रभु श्रीराम मयार्दा, कर्तव्य और आदर्श जीवन का संदेश देते हैं: बी एल संतोष



परिवहन विशेष न्यूज

नई दिल्ली: आदर्श रामलीला कमेटी अशोक विहार फेस-2 में राम-सुग्रीव मित्रता, अशोक वाटिका में सीता हनुमान भेंट, लंका दहन की लीला का मंचन निपुण कलाकारों द्वारा प्रस्तुत किया गया। जहां अशोक वाटिका के मनभावक दृश्य तो वही लंका दहन का सजीव दृश्य दिखाया गया। मुख्य अतिथि के रूप में भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय संगठन महामंत्री बी एल संतोष, महापौर प्रवेश वाही व भारतीय जनता पार्टी प्रदेश कोषाध्यक्ष सतीश गर्ग उपस्थित हुए।

इस अवसर पर बीएल संतोष ने कहा कि प्रभु श्री राम भारतीय संस्कृति सभ्यता और जीवन मूल्यों के ऐसे आदर्श हैं जो हमें जीवन जीने की सही दिशा का बोध कराते हैं उनका जीवन सत्य, मयार्दा, त्याग, करुणा, कर्तव्य निष्ठा और लोक कल्याण की भावना का अनुपम उदाहरण है श्री राम का चरित्र हमें सिखाता है कि जीवन में परिस्थितियां कितनी भी कठिन क्यों ना हो हमें अपने सिद्धांतों, नैतिक मूल्यों और कर्तव्यों से विमुख नहीं होना चाहिए। प्रभु श्री राम का जीवन एक आदर्श जीवन शैली का मार्गदर्शन है। प्रवेश वाही कहा कि श्रीराम का संपूर्ण जीवन हर पहलू पर मानव समाज के लिए अनुकरणीय हैं।

अध्यक्ष अशोक गर्ग व महामंत्री देवराज कोली व चंदन शर्मा ने कलाकारों के मंचन को सराहा। कार्यक्रम में उषा गोयल, रजनी गुप्ता, रश्मि राजपाल, हर्षित खंडेलवाल अनुज जैन उपस्थित रहे।

कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने महाराजा अग्रसेन सामुदायिक केंद्र का किया शिलान्यास

हवाई अड्डे पर स्थापित होगी महाराजा अग्रसेन की भव्य प्रतिमा

हरियाणा हिसार// राजेश सलूजा



समाजवाद और जनकल्याण के प्रणेता, 'एक रुपया और एक ईंट' के सिद्धांत से पूरे विश्व को आपसी भाईचारे का संदेश देने वाले महाराजा अग्रसेन की जयंती के उपलक्ष्य पर शनिवार को बरवाला में एक भव्य कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने बतौर मुख्यातिथि शिरकत की। महाराजा अग्रसेन वेलफेयर सोसाइटी द्वारा आयोजित इस समारोह के अवसर पर उन्होंने समाजसेवा, सामाजिक समरसता एवं जनकल्याण के संकल्प को आगे बढ़ाते हुए महाराजा अग्रसेन सामुदायिक केंद्र का भी शिलान्यास किया। अपने संबोधन में कैबिनेट मंत्री रणबीर गंगवा ने कहा कि महाराजा अग्रसेन का जीवन हमें समानता, सहयोग, सेवा और परोपकार की प्रेरणा देता है। यह सामुदायिक केंद्र समाज के लोगों के लिए एक महत्वपूर्ण स्थान बनेगा, जहाँ सामाजिक एवं सामूहिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा। उन्होंने कहा कि महाराजा अग्रसेन जी की शिक्षाएँ हमें सदैव समाजहित में कार्य करने की प्रेरणा देती रहेंगी। कैबिनेट मंत्री ने कहा कि महाराजा अग्रसेन की ऐतिहासिक राजधानी अग्रोहा हम सभी के लिए परम आस्था का केंद्र है। हरियाणा सरकार अग्रोहा धाम के चहुंमुखी विकास के लिए पूरी तरह से प्रतिबद्ध और निरंतर प्रयासरत है। महाराजा अग्रसेन से जुड़े गौरवशाली इतिहास और हमारी प्राचीन संस्कृति को पूरी दुनिया के सामने लाने के लिए सरकार ने ऐतिहासिक 'अग्रोहा थेह' की पुरातात्विक खुदाई करवाने का ऐतिहासिक कार्य शुरू किया है, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ियां अपने महान इतिहास पर गर्व कर सकें। उन्होंने कहा कि हमारी सरकार सिंधु-सरस्वती सभ्यता के इन प्राचीन टीलों की जियो-टैगिंग करने की शुरुआत की है और बहुत जल्द यहाँ पर एक भव्य एवं आधुनिक म्यूजियम की स्थापना की जाएगी। सरकार का संकल्प अग्रोहा को केवल एक ऐतिहासिक स्थल बनाए रखने तक सीमित नहीं है। सरकार अग्रोहा को एक 'ग्लोबल सिटी' और अंतरराष्ट्रीय स्तर के धार्मिक व सांस्कृतिक पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित करने की एक बहुत बड़ी योजना पर काम कर रही है। आने वाले समय में पूरी दुनिया से बड़ी संख्या में लोग अग्रोहा की इस पवित्र धरा के दर्शन करने आएंगे। इस पूरे क्षेत्र की प्रगति को पंख लगाने के लिए इस वैश्विक नगर के बिल्कुल पास 'महाराजा अग्रसेन हवाई अड्डा' स्थित है, जो इस पूरे इलाके को देश और दुनिया के साथ सीधे और सुगम तरीके से जोड़ेगा। यहां से अयोध्या, जयपुर, चंडीगढ़, दिल्ली आदि स्थानों के लिए हवाई सेवा शुरू हो गई है। इस हवाई अड्डे के परिसर में सरकार जल्द ही महाराजा अग्रसेन की एक भव्य प्रतिमा स्थापित करने जा रही है, जो यहाँ आने वाले हर यात्री को उनके आदर्शों की प्रेरणा देगी।

मगध विश्वविद्यालय में 26 से 28 नवंबर तक होगा 69वां अखिल भारतीय अंग्रेजी शिक्षक सम्मेलन

साहित्य, भाषा और समाज में बदलाव की भूमिका पर देशभर के शिक्षाविद् करेंगे विचार-विमर्श



बोधगया। मगध विश्वविद्यालय, बोधगया में आगामी 26 से 28 नवंबर तक 69वें अखिल भारतीय अंग्रेजी शिक्षक सम्मेलन का आयोजन किया जाएगा। भारतीय अंग्रेजी अध्ययन संघ के तत्वावधान में आयोजित यह तीन दिवसीय राष्ट्रीय सम्मेलन विश्वविद्यालय के अंग्रेजी स्नातकोत्तर विभाग एवं अनुसंधान केंद्र में होगा।

सम्मेलन का मुख्य विषय 'परिवर्तन के आख्यान : साहित्य, भाषा और समाज का अन्वेषण' रखा गया है। इसके अंतर्गत साहित्य, भाषा और संस्कृति के माध्यम से सामाजिक बदलाव, पहचान, स्मृति, वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी तथा समकालीन मानवीय अनुभवों पर चर्चा की जाएगी।

इस सम्मेलन में अंग्रेजी भाषा एवं साहित्य के प्राध्यापकों, शोधार्थियों, शिक्षाविदों, साहित्यकारों और विद्यार्थियों के शामिल होने की अपेक्षा है। इसमें साहित्यिक अध्ययन, भाषाई अनुसंधान, साहित्यिक आलोचना तथा बदलते सामाजिक परिवेश में साहित्य और भाषा की भूमिका पर विचारों का आदान-प्रदान होगा।

सम्मेलन का आयोजन मगध विश्वविद्यालय के अंग्रेजी स्नातकोत्तर विभाग एवं अनुसंधान केंद्र द्वारा किया जा रहा है। प्रोफेसर डॉ. नीरज कुमार सम्मेलन के आयोजन सचिव हैं।

आयोजकों के अनुसार, सम्मेलन में भाग लेने के लिए भारतीय अंग्रेजी अध्ययन संघ की सदस्यता अनिवार्य होगी। संघ के वार्षिक, अल्पकालिक अथवा आजीवन सदस्य इसमें सहभागिता कर सकेंगे।

यह सम्मेलन साहित्य, भाषा और समाज के पारस्परिक संबंधों को समझने तथा अंग्रेजी अध्ययन के क्षेत्र में शैक्षणिक संवाद को मजबूत करने का महत्वपूर्ण मंच बनेगा। बदलते वैश्विक परिवेश में साहित्य की प्रासंगिकता और सामाजिक परिवर्तन में उसकी भूमिका पर भी व्यापक चर्चा की जाएगी।

एसएसबी ने 50 युवतियों को दिया आत्मनिर्भरता का हुनर

सिलाई और ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण पूरा, प्रशिक्षुओं को मिला प्रमाण पत्र



नरकटियागंज। भारत-नेपाल सीमा की सुरक्षा में अहम भूमिका निभाने वाली एसएसबी की 44वीं वाहिनी नरकटियागंज की ओर से सीमावर्ती क्षेत्र की युवतियों को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से चलाए गए सिलाई एवं ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण कार्यक्रम का शनिवार को समापन हुआ। राजकीय बुनियादी विद्यालय, दोमट के प्रांगण में आयोजित समारोह का उद्घाटन कमांडेंट श्री बलवंत सिंह नेगी एवं उपस्थित जनप्रतिनिधियों ने संयुक्त रूप से दीप प्रज्ज्वलित कर किया।

कार्यक्रम के तहत 25 युवतियों को 30 दिनों का सिलाई प्रशिक्षण तथा 25 युवतियों को 30 दिनों का ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण दिया गया। सिलाई प्रशिक्षण वाइब्रेंट विलेज जम्होली और ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण वाइब्रेंट विलेज कैरी की युवतियों को दिया गया। प्रशिक्षण पूरा करने वाले सभी 50 प्रशिक्षुओं को प्रमाण पत्र प्रदान किए गए। दोनों प्रशिक्षण कार्यक्रम संस्कृति फाउंडेशन (एनजीओ) के सहयोग से संचालित किए गए।

एसएसबी की ओर से सीमावर्ती क्षेत्रों में बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ, पर्यावरण संरक्षण, रक्तदान, मधुमक्खी पालन, नशामुक्त भारत अभियान तथा सरकारी योजनाओं के प्रति भी लोगों को जागरूक किया जाता है।

समारोह में 44 वीं वाहिनी एसएसबी के सहायक कमांडेंट रामवीर कुमार बीडीओ ब्रह्मदेव प्रसाद, प्रखंड प्रमुख जय प्रकाश पासवान, उप प्रमुख राजेश गढ़वाल, संस्कृति फाउंडेशन की निदेशक निधि राय सहित एसएसबी के अधिकारी, जनप्रतिनिधि एवं ग्रामीण उपस्थित रहे।

वैश्विक अर्थव्यवस्था में उथल-पुथल!

शेयर बाजार से विदेशी पूंजी की उड़ान, LTCG-STT पर बजट 2027 की अग्निपरीक्षा



● एडवोकेट किशन सनमुखदास भावनानीं

वित्तमंत्री ने ब्लूमबर्ग न्यू इकोनॉमी फोरम 2026 में LTCG-STT में बदलाव का कोई स्पष्ट आश्वासन नहीं दिया। उन्होंने कहा – बजट की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं, सरकार निवेशकों के विचार सुनने को तैयार है, लेकिन इस स्तर पर प्रतिबद्धता जताना जल्दबाजी होगी।

चावल की महंगाई, जियो का मेगा IPO और ट्रंप के टैरिफ यू-टर्न से भारत की अर्थव्यवस्था किस करवट बैठेगी?

मुख्य बिंदु – तथ्यों सहित

- 1. निर्णायक मोड़: एक ओर FPI बिकवाली, मुद्रा अस्थिरता और व्यापारिक तनाव, दूसरी ओर जियो IPO, सैटेलाइट इंटरनेट और चावल व्यापार में भारत की बढ़ती भूमिका — नए अवसर और नई चुनौतियाँ साथ-साथ

- 2. FPI की उड़ान: SBI रिसर्च (अक्टूबर 2026) के अनुसार अक्टूबर तक FPI लगभग ₹44,166 करोड़ की इक्विटी बेच चुके थे, वर्ष 2026 में कुल निकासी लगभग ₹3.04 लाख करोड़ बताई गई — यह प्रकाशन-समय का आंकड़ा है

- 3. LTCG-STT वर्तमान व्यवस्था: ₹1.25 लाख से अधिक LTCG पर 12.5%, STT — डिलीवरी 0.1% प्रति पक्ष, इंट्राडे 0.025%, फ्यूचर 0.05%, ऑप्शन प्रीमियम 0.15% (1 अप्रैल 2026 से लागू)

- 4. चावल संकट: रॉयटर्स (17 सितंबर 2026) — उत्पादन 154 मिलियन टन से घटकर 144 मिलियन टन अनुमान, 10 मिलियन टन गिरावट। भारतीय चावल निर्यात मूल्य $385-390/टन बनाम वियतनाम $440-450, थाईलैंड $480 — भारत अभी भी प्रतिस्पर्धी

- 5. जियो IPO: 21-23 अक्टूबर 2026, आकार लगभग ₹37,700 करोड़ / $3.2 बिलियन, भारत के सबसे बड़े निर्गमों में एक

- 6. ट्रंप टैरिफ यू-टर्न: 17 अक्टूबर 2026 — रूस से तेल-गैस खरीदने वालों पर 100% तक (पूर्व में 500% तक चर्चा) टैरिफ को फिलहाल रोका गया। भारत को रूसी तेल पर अतिरिक्त दंड से तत्काल राहत, पर अनिश्चितता बरकरार

विस्तृत विश्लेषण वैश्विक अर्थव्यवस्था एक ऐसे मोड़ पर खड़ी है, जहाँ एक ओर विदेशी निवेशकों की बिकवाली, मुद्रा बाजार की अस्थिरता और व्यापारिक तनाव भारतीय शेयर बाजार की परीक्षा ले रहे हैं, तो दूसरी ओर रिलायंस जियो का प्रस्तावित विशाल IPO, उपग्रह इंटरनेट की प्रतिस्पर्धा और भारत की अंतरराष्ट्रीय चावल व्यापार में बढ़ती भूमिका नए अवसरों के संकेत दे रहे हैं।

1. LTCG-STT पर फैसला — बजट 2027 से बड़ी उम्मीदें SBI रिसर्च ने सुझाव दिया कि इक्विटी पर LTCG समाप्त करने तथा निवेश की न्यूनतम अवधि 2 से 3 वर्ष करने पर विचार हो। उद्देश्य है अल्पकालिक, अस्थिर विदेशी पूंजी का प्रभाव कम करना और दीर्घकालिक निवेश को प्रोत्साहित करना।

वित्तमंत्री ने ब्लूमबर्ग न्यू इकोनॉमी फोरम 2026 में LTCG-STT में बदलाव का कोई स्पष्ट आश्वासन नहीं दिया। उन्होंने कहा — बजट की तैयारियां शुरू हो चुकी हैं, सरकार निवेशकों के विचार सुनने को तैयार है, लेकिन इस स्तर पर प्रतिबद्धता जताना जल्दबाजी होगी।

मेरा मत (एडवोकेट भावनानीं): बजट 2027 में स्पष्ट कर-नीति, दीर्घकालिक निवेशकों के लिए प्रोत्साहन और STT की प्रतिस्पर्धात्मक समीक्षा अवश्य होनी चाहिए। कर कटौती से ही FPI वापसी सुनिश्चित नहीं होती — वैश्विक ब्याज दरें, डॉलर की मजबूती, कंपनियों की कमाई और भू-राजनीतिक जोखिम भी निर्णायक हैं।

2. चावल की कीमतों में आग कमजोर मानसून और बुवाई क्षेत्र में कमी से उत्पादन में गिरावट का अनुमान है। सरकारी भंडार 1 सितंबर को लगभग 59.6 मिलियन टन बताया गया, जो बफर आवश्यकता से अधिक है। फिर भी परिवहन लागत, जमाखोरी और त्योहारी मांग से खुदरा कीमतें बढ़ सकती हैं।

इसी पृष्ठभूमि में भारतीय अंतरराष्ट्रीय चावल सम्मेलन 2026 (BIRC) 23-25 अक्टूबर को नई दिल्ली के भारत मंडपम में हो रहा है। 9 ज्ञान-सत्र, कारोबारी बैठकें — निर्यातकों को नए बाजार, भुगतान जोखिम कम करने और गुणवत्ता मानक समझने का अवसर मिलेगा।

चीनी की स्थिति भी चिंताजनक है — 16 अक्टूबर को 2026-27 के लिए इथेनॉल आपूर्ति में गन्ने के रस, सिरप और B-हैवी शीरे से चीनी-आधारित इथेनॉल के लिए चीनी का इस्तेमाल न करने का प्रावधान, ताकि घरेलू चीनी आपूर्ति सुरक्षित रहे।

3. ट्रंप का टैरिफ यू-टर्न रूस संबंधी प्रस्तावित दंडात्मक शुल्कों के क्रियान्वयन पर छूट से भारत को रूसी तेल खरीद पर संभावित अतिरिक्त अमेरिकी दंड का तत्काल जोखिम कम हुआ है। यदि प्रतिस्पर्धात्मक दरों पर कच्चा तेल मिलता रहे, तो तेल आयात बिल, चालू खाते और घरेलू महंगाई पर दबाव कम होगा। लेकिन यह राहत सशर्त है — पश्चिम एशिया का संघर्ष, तेल आपूर्ति में व्यवधान, डॉलर की मजबूती और भविष्य की अमेरिकी नीति फिर अस्थिरता पैदा कर सकती है।

4. जियो IPO और स्टारलिंक की नई जंग जियो प्लेटफॉर्म्स का IPO भारत के सबसे बड़े निर्गमों में शामिल होगा। इतने बड़े IPO से नई पूंजी जुटाने की क्षमता और डिजिटल अर्थव्यवस्था में भरोसा प्रदर्शित होगा, लेकिन सीमित पूंजी के कारण दूसरे शेयरों में मांग प्रभावित होने की आशंका भी है।

दूसरी ओर एलन मस्क की स्टारलिंक भारत में सैटेलाइट हाई-स्पीड इंटरनेट शुरू करने की तैयारी में है। रिलायंस ने कहा है कि भारत में कारोबार करने वाली सभी कंपनियों को समान नियम और मंजूरी प्रक्रिया का पालन करना चाहिए। यह प्रतिस्पर्धा ग्रामीण क्षेत्रों, शिक्षा, स्वास्थ्य और डिजिटल कारोबार के लिए गेम-चेंजर हो सकती है।

संपादकीय निष्कर्ष — अग्निपरीक्षा बजट 2027 को राजस्व संग्रह, निवेशकों का भरोसा और आम उपभोक्ता को खाद्य महंगाई से राहत — तीनों के बीच संतुलन बनाना होगा। LTCG-STT में संतुलित सुधार, चावल-चीनी की आपूर्ति समीक्षा, जमाखोरी पर निगरानी और ट्रंप नीतियों पर सतर्कता — यही भारत की आर्थिक दिशा तय करेगी।

परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक – संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक





तन पर चोला साधु का, मन में भरा विकार!



पाखंड पर व्यंग्य — वस्त्र बदलने से नहीं, मन जीतने से होता है सच्चा संन्यास

— संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक - परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक

- 1. व्यंग्य का केंद्र: बाहर से साधु का वेश, भीतर लोभ, मोह, ममत्व और व्यापार — यही आज का सबसे बड़ा पाखंड है

- 2. सच्चा संन्यास: संन्यास वेश का नाम नहीं, मन का सार है — जिसने मन को जीत लिया, उसका बेड़ा पार

- 3. ज्ञान का सार: माला हाथ में हो या चोला तन पर, जब तक मन में विकार है, भव से पार होना संभव नहीं

- 4. सामाजिक संदेश: नग्न विचारों से समाज में विकार बढ़ता है, संयम की मर्यादा से ही विचार शुद्ध होता है

विस्तृत संपादकीय लेख

तन पर चोला साधु का, मन में भरा विकार।
कैसे होगा मुक्त वह, मन में हो संसार॥

यही इस कविता की पहली चोट है। हमारे समाज में साधुता को हमने वेश से जोड़ दिया है। भगवा चोला, रुद्राक्ष की माला, माथे पर तिलक और वाणी में उपदेश — यही पहचान बन गई है। लेकिन कवि पूछता है, यदि मन में ही संसार भरा हो, लोभ और विकार पल रहे हों, तो यह वेश किस काम का?

>लिप्त रहे निर्लिप्त बन, ओढ़े धर्म लिबास।

>मन से मोह न मिट सके, कैसा फिर संन्यास॥

धर्म आज कई लोगों के लिए लिबास बन गया है। ओढ़ लिया, तो सम्मान मिल गया, अनुयायी मिल गए, यशगान होने लगा। पर भीतर ममत्व, अहंकार और भोग-विलास की प्यास जस की तस है। ऐसा त्याग दिखावा मात्र है।

कवि आगे और तीखा होता है —

>वस्त्र बदलने से भला, बदल सके क्या चित्त।

>मन में लोभ-विकार हों, कैसे हो वह निर्लिप्त॥

वस्त्र बदलना आसान है, चित्त बदलना कठिन। साधन बदल गए, वेश बदल गया, लेकिन स्वभाव नहीं बदला तो नव निर्माण कैसे होगा? धर्म ध्वजा लेकर चलने वाले के मन में जब भेद हजार हों, तो मानवता कैसे बचेगी? वाणी में उपदेश और आचरण में दोष हो, तो जग को राह कौन देगा?

इस कविता की सबसे बड़ी ताकत इसका समाधान है। यह केवल व्यंग्य नहीं करती, ज्ञान भी देती है —

>संयम केवल वेश ना, संयम मन का सार।

>जिसने मन को जीत लिया, उसका बेड़ा पार॥

>मोह मिटे, ममता घटे, निर्मल हो अहसास।

>तभी सार्थक साधना, तभी सच्चा संन्यास॥

सच्चा योग अंतर की निर्मलता में है। देह सजाकर क्या मिला, जब मन का मैल न जाए? भीतर शुचिता हो तभी जीवन में उजियार होगा। दोहरी जीव-रीति से अत्याचार ही बढ़ता है।

इसलिए नवरात्र, दशहरा या किसी भी पर्व की सार्थकता केवल अनुष्ठान में नहीं, आचरण की शुद्धता में है। जब तक हम मन को नहीं जीतेंगे, तब तक चोला, माला और ध्वजा केवल आडंबर रहेंगे।

सियासत की बिसात और युवा भारत, कुर्सी की दौड़ या भविष्य की फ़िक्र?

डॉ. मुश्ताक़ अहमद शाह सहज़

हरदा मध्य प्रदेश

आज देश का राजनीतिक परिदृश्य एक ऐसे चौराहे पर खड़ा है, जहाँ हर रोज़ नए समीकरण बन-बिगड़ रहे हैं। लोकतंत्र के मंदिर से लेकर सड़कों तक, हर जगह एक अजीब सी उथल-पुथल मची हुई है। संसद के गलियारों से लेकर आंदोलनों के गढ़ जंतर-मंतर तक, देश का राजनीतिक पारा सातवें आसमान पर है। इस बीच, सबसे बड़ा और ज्वलनशील सवाल यह है कि इस कशमकश में देश का लोकतंत्र, इसका राजनीतिक भविष्य और सबसे अहम, हमारा नवयुवक किस दिशा में जा रहा है?

क्या राजनेताओं को वाकई देश के युवाओं के भविष्य की चिंता है, या यह सब सिर्फ़ कुर्सी बचाने और हथियाने का एक सियासी खेल बनकर रह गया है?

जंतर-मंतर का परिदृश्य, उम्मीद और निराशा का संगम,

देश की राजधानी का जंतर-मंतर हमेशा से भारत की राजनीतिक नब्ज़ को टटोलने का केंद्र रहा है। आज जंतर-मंतर की तरफ़ देखें, तो वहाँ का परिदृश्य बेहद विरोधाभासी और आँखें खोल देने वाला है,

आक्रोश और उम्मीद,,,एक तरफ़ जहाँ युवाओं का हुजूम रोजगार, पेपर लीक, शिक्षा के गिरते स्तर और अपने लोकतांत्रिक अधिकारों के लिए सड़कों पर उतरा हुआ है, वहीं दूसरी तरफ़ उनकी आवाज़ को दबाने या राजनीतिक रोटियां सेकने के प्रयास भी साफ दिखते हैं।

बदलती राजनीतिक चेतना, आज का युवा सिर्फ़ नारे लगाने वाला मुखौटा नहीं है, वह सवाल पूछ रहा है। चाहे वह सोशल मीडिया का वर्चुअल वॉर रूम हो या जंतर-मंतर की तपती धूप, युवा अब अपनी ताक़त और अधिकारों को लेकर पहले से कहीं अधिक जागरूक है।

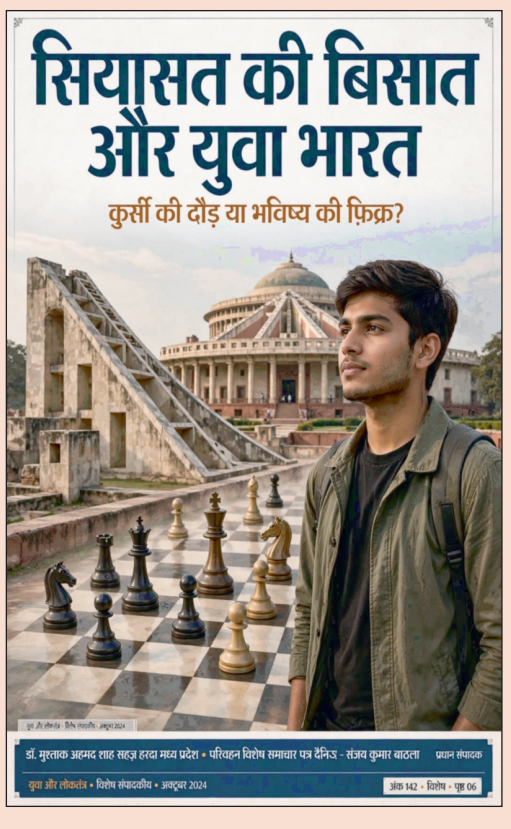
निराशा का साया, हक़ीक़त यह भी है कि महीनों धरने पर बैठने के बाद भी जब युवाओं के हाथ निराशा लगती है, तो उनका देश की व्यवस्था और राजनेताओं दोनों से विश्वास उठने लगता है। यह मोहभंग हमारे लोकतंत्र के लिए एक ख़तरनाक संकेत है।

पक्ष, विपक्ष और युवा,, दिशाहीनता या सुनियोजित राजनीति?

आज देश का राजनीतिक परिदृश्य दो ध्रुवों में बंटा हुआ है, सत्ता पक्ष और विपक्ष। लेकिन इन दोनों की लड़ाई में असली मुद्दा कहीं खो गया है,

सत्ता पक्ष का दृष्टिकोण,,सरकारें अक्सर राष्ट्रवाद, विकास के बड़े आंकड़ों और डिजिट्ल इंडिया के विज़न के साथ युवाओं को आकर्षित करती हैं। स्टार्टअप्स और ग्लोबल मंचों पर भारत के युवाओं की सफ़लता को सराहा जाता है, जो कि सच भी है। लेकिन क्या यह चमक-धमक देश के उन करोड़ों युवाओं तक पहुँच पा रही है जो हर साल डिग्रियां लेकर सरकारी नौकरियों की कतार में खड़े-खड़े ओवरएज हो रहे हैं?

विपक्ष के पास आज सरकार की नाकामियों (जैसे बेरोजगारी, महंगाई और सामाजिक विभाजन) को उठाने का बड़ा मौक़ा है। लेकिन अक्सर विपक्ष की राजनीति भी सिर्फ़ चुनावी लाभ, जातिगत समीकरणों और सत्ता प्राप्ति की महत्त्वाकांक्षा तक सीमित होकर रह जाती है। युवा सिर्फ़ उनके भाषणों का हिस्सा बनकर रह जाते हैं, ज़मीनी एजेंडे का नहीं।



यदि राजनेताओं को वाक़ई युवाओं की फ़िक्र होती, तो

शिक्षा व्यवस्था इतनी लाचार न होती कि छात्रों को अपने हक़ के लिए सड़कों पर उतरना पड़े।

प्रतियोगी परीक्षाओं के पेपर लीक होना एक नियमित राष्ट्रीय त्रासदी न बन गया होता।

युवाओं की ऊर्जा का उपयोग नफ़रत की राजनीति में न होकर देश के नवनिर्माण में हो रहा होता।

लोकतंत्र का असली वारिस कौन?

आज देश का नवयुवक एक अजीब क़शमक़श में है। वह विकास भी चाहता है और अपनी अस्मिता की रक्षा भी। वह आधुनिकता की दौड़ में सबसे आगे रहना चाहता है, लेकिन सिस्टम की जकड़न उसे पीछे खींच लेती है।

जंतर-मंतर की गूँज और देश की उथल-पुथल साफ़ काइशारा करती है कि लोकतंत्र केवल नेताओं की जागीर नहीं है, बल्कि यह आम जनता और विशेषकर युवाओं के विश्वास पर टिका है। अगर राजनेताओं ने अब भी कुर्सी की अपनी इस अंधी दौड़ को छोड़कर युवाओं के भविष्य, रोजगार और शिक्षा को अपनी प्राथमिकता नहीं बनाया, तो यह असंतोष किसी भी राजनीतिक दल के लिए नहीं, बल्कि पूरे देश के लोकतंत्र के लिए अच्छा नहीं होगा,

वक्त आ गया है कि कुर्सी बचाने या पाने की इस सियासत को छोड़कर, देश की असली ताक़त यानी 'युवा शक्ति' की सुध ली जाए, क्योंकि देश का भविष्य राजधानियों के कमरों में नहीं, युवाओं के सपनों में बसता है।

क्या राजनेताओं को वाकई फिक्र है?

कड़वी सच्चाई यह है कि आज की राजनीति का मुख्य केंद्र-बिंदु 'जनहित' से खिसक कर 'सिंहासन' पर केंद्रित हो गया है। चुनाव आते ही युवाओं को 'देश का भविष्य' और 'लोकतंत्र का पहरेदार' बताकर मंचों पर बुलाया जाता है, घोषणापत्रों में रोजगार के बड़े-बड़े ख्वाब दिखाए जाते हैं। लेकिन चुनाव ख़त्म होते ही वे वादे फ़ाइलों में दफ़न हो जाते हैं।

विश्व प्रसिद्ध है मैसूर का दशहरा पर्व

असत्य पर सत्य की जीत — जहाँ 750 किलो स्वर्ण हौदा लेकर निकलती है जंबो सवारी

लेखक: चेतन चौहान, परिवहन विशेष समाचार पत्र दैनिक — संजय कुमार बाठला, प्रधान संपादक



मुख्य बिंदु — तथ्यों सहित

- 1. पर्व का संदेश: दशहरा असत्य पर सत्य की जीत का प्रतीक है — राम-रावण के भीषण संग्राम में भगवान राम की विजय के बाद प्रतिवर्ष आश्विन मास की शुक्ल पक्ष की दशमी को यह पर्व मनाया जाता है

- 2. मैसूर का दशहरा: ऐतिहासिक, धार्मिक संस्कृति और आनंद का अद्भुत सामंजस्य — कर्नाटक सरकार ने इसे राज्योत्सव (नाडा हब्बा) का सम्मान दिया है

- 3. जंबो सवारी: उत्सव के आखिरी दिन मैसूर महल से बन्नीमंडप तक लगभग 3 किमी की शोभा यात्रा — इसमें 12 हाथी शामिल होते हैं, हर हाथी की अपनी विशेषता

- 4. स्वर्ण हौदा: अंबारी हाथी की पीठ पर चामुंडेश्वरी देवी की प्रतिमा सहित 750 किलो का स्वर्ण हौदा रखा जाता है

- 5. इतिहास: विजयनगर साम्राज्य से शुरू हुई परंपरा, वाडेयार राजवंश के शासक कृष्णराज वाडेयार ने इसे दशहरा नाम दिया। दशहरे से ठीक एक दिन पहले युवा नंजाराजा की मृत्यु के बाद भी राजा ने परंपरा नहीं टूटने दी — यही निर्देशिका आज भी पालन हो रही है।

मैसूर। हमारे देश में मनाए जाने वाले प्रत्येक त्योहार के पीछे कोई न कोई संदेश छिपा रहता है। दशहरा उन्हीं में से एक है जो असत्य पर सत्य की जीत का संदेश देता है। राम-रावण के युद्ध में अंतत: भगवान राम ने रावण को परास्त किया और इसके बाद से प्रतिवर्ष विजयदशमी मनाई जाती है। पूरे देश में रावण का पुतला जलाया जाता है, लेकिन मैसूर का दशहरा इस पर्व को एक अलग ही ऊँचाई देता है।

मैसूर का दशहरा काफी विख्यात है। भारत के प्रमुख स्थानों में से एक इस स्थान पर भी विजयदशमी बहुत उत्साह के साथ मनाई जाती है। यहाँ का उत्सव ऐतिहासिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आनंद का अद्भुत सामंजस्य प्रस्तुत करता है। हालांकि इस उत्सव के दौरान आयोजित होने वाले सभी कार्यक्रम दर्शनीय होते हैं, लेकिन इस उत्सव में 12 हाथी शामिल न हों तो यह उत्सव अधूरा सा लगेगा। सबसे खास बात तो यह है कि इस उत्सव में शामिल होने वाले सभी हाथियों की अपनी अलग विशेषता होती है।

एक दशहरा उत्सव के आखिरी दिन 'जंबो सवारी' आयोजित की जाती है। यह सवारी मैसूर महल से प्रारंभ होती है। इसमें रंग-बिरंगे, अलंकृत कई हाथी एक साथ शोभा यात्रा के रूप में चलते हैं और इनका नेतृत्व करने वाला विशेष हाथी अंबारी है, जिसकी पीठ पर चामुंडेश्वरी देवी की प्रतिमा सहित 750 किलो का 'स्वर्ण हौदा' रखा जाता है। यह सवारी बन्नीमंडप पहुँचकर समाप्त होती है। बन्नीमंडप से मैसूर महल की दूरी लगभग 3 किलोमीटर है।

मैसूर के दशहरे का इतिहास मैसूर नगर के इतिहास से जुड़ा है जो मध्यकालीन दक्षिण भारत के अद्वितीय विजयनगर साम्राज्य के समय से शुरू होता है। इस पर्व को वाडेयार राजवंश के लोकप्रिय शासक कृष्णराज वाडेयार ने दशहरे का नाम दिया था। वर्तमान में इस उत्सव की लोकप्रियता देखकर कर्नाटक सरकार ने इसे राज्योत्सव का सम्मान प्रदान किया है। राजा वाडेयार की इच्छा थी कि इस उत्सव को आने वाली पीढ़ियां याद रखें तथा उसी प्रकार से मनाएं, जिस प्रकार विजयनगर के शासक मनाया करते थे।

राजा ने निर्देशिका तैयार की थी, जिसमें लिखा था कि किसी भी कारण से दशहरा मनाने की परंपरा टूटनी नहीं चाहिए। कहा जाता है कि दशहरे से ठीक एक दिन पहले राजा के पुत्र नंजाराजा की मृत्यु हो गई थी परंतु फिर भी राजा वाडेयार ने बिना किसी अवरोध के 'दशहरा उत्सव' का आयोजन किया और अपनी परंपरा को कायम रखा तथा उनके बाद वाडेयार राजघराने के वंशजों ने भी इस परंपरा को जीवित रखने की कोशिश जारी रखी।

वर्तमान समय में मैसूर का दशहरा एक अंतर्राष्ट्रीय उत्सव बन गया है और इस उत्सव में शामिल होने के लिए देश-विदेश से हज़ारों पर्यटक मैसूर आते हैं।

वैदिक संस्कृति और संस्कारों का संगम बना डी.ए.वी.आर.जी.टी.पी.पी. पब्लिक स्कूल, खेदड़ - कोमल शर्मा

प्रेरणा सप्ताह के अंतर्गत पावन हवन यज्ञ का किया आयोजन

हरियाणा/ हिसार (राजेश सलूजा) :



डी.ए.वी.आर.जी.टी.पी.पी. पब्लिक स्कूल, खेदड़ के प्रांगण में प्रेरणा सप्ताह के अंतर्गत पावन हवन-यज्ञ का आयोजन किया गया। यह आयोजन आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हरियाणा के प्रधान एवं विद्यालय के उप-प्रधान सत्यपाल आर्य की प्रेरणा तथा विद्यालय प्रबंधक अजय एलावादी के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। आर्य समाज की महान विभूति महात्मा आनंद स्वामी की जयंती के अवसर पर आयोजित इस कार्यक्रम में विद्यार्थियों ने वैदिक मंत्रोच्चारण के साथ आहुतियाँ दीं और भारतीय संस्कृति एवं संस्कारमय जीवन का संदेश ग्रहण किया। आर्य प्रादेशिक प्रतिनिधि उपसभा, हरियाणा के तत्वावधान में आयोजित प्रेरणा सप्ताह का उद्देश्य विद्यार्थियों को वैदिक संस्कारों से जोड़ना, आर्य समाज की गौरवशाली परंपराओं से परिचित कराना तथा नशामुक्त एवं स्वस्थ समाज के निर्माण के प्रति जागरूक करना है। विद्यालय की प्रधानाचार्या कोमल शर्मा ने विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए अनुशासन, नैतिक मूल्यों और बड़ों के आदर के महत्व पर बल दिया। साथ ही उन्होंने विद्यार्थियों को आर्य युवा समाज के राष्ट्रव्यापी नशा मुक्ति आंदोलन नो नशा नेशन के बारे में भी अवगत कराया। उन्होंने विद्यार्थियों को स्वामी आनंद के आदर्शों पर चलने तथा नशे जैसी सामाजिक बुराइयों से दूर रहकर एक संस्कारवान समाज के निर्माण में योगदान देने के लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा कि डी.ए.वी. आर.जी.टी.पी.पी. पब्लिक स्कूल, खेदड़ वैदिक संस्कृति और संस्कारों का संगम बन गया है। इस अवसर पर अक्टूबर माह में जन्मे विद्यार्थियों के अभिभावकों ने विशेष रूप से इस पावन यज्ञ में भाग लिया। यह आयोजन विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण की दिशा में एक सराहनीय पहल रहा, जिसकी अभिभावकों ने भूरि-भूरि प्रशंसा की।

देवी दुर्गा के स्वरूप में नन्ही बलिका

वहीं छोटी छोटी बच्चियों ने गरबा नृत्य में मन मोह लिया।

फोटो जर्नलिस्ट निखिल चौहान इन्दौर द्वारा







ग्रीन फील्ड ई-स्कूल में दशहरा उत्सव और गरबा-डांडिया की धूम

पारंपरिक वेशभूषा में विद्यार्थियों ने दी मनमोहक प्रस्तुतियां, निदेशक अमय मौर्य ने दिया सत्य और सदाचार के मार्ग पर चलने का संदेश

परिवहन विशेष न्यूज



गयाजी। ग्रीन फील्ड ई-स्कूल, गया के परिसर में दशहरा उत्सव एवं गरबा-डांडिया नृत्य समारोह हर्षोल्लास और पारंपरिक सांस्कृतिक वातावरण में आयोजित किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ मां नवदुर्गा की विधिवत आरती के साथ हुआ। इसमें विद्यालय के निदेशक अमय मौर्य, हेड कोऑर्डिनेटर आर. के. वर्मा, कोऑर्डिनेटर, शिक्षक-शिक्षिकाओं एवं विद्यार्थियों ने भाग लिया।

समारोह में विद्यार्थियों ने पारंपरिक वेशभूषा में गरबा और डांडिया नृत्य की आकर्षक प्रस्तुतियां दीं। छात्र कुर्ता-पायजामा और छात्राएं पारंपरिक लहंगे में शामिल हुईं। रंग-बिरंगे परिधानों, मधुर संगीत और डांडिया की थाप से विद्यालय परिसर उत्सवी रंग में रंग गया।

विद्यालय के निदेशक अमय मौर्य ने विद्यार्थियों, अभिभावकों और शिक्षक-शिक्षिकाओं को दशहरा की शुभकामनाएं देते हुए कहा कि यह पर्व बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक है। ऐसे आयोजन विद्यार्थियों को भारतीय संस्कृति और परंपराओं से जोड़ने के साथ उनमें नैतिक मूल्यों, अनुशासन और सामाजिक एकता की भावना विकसित करते हैं।

हेड कोऑर्डिनेटर आर. के. वर्मा ने कहा कि दशहरा सत्य, धर्म और न्याय के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देता है। उन्होंने विद्यार्थियों की प्रस्तुतियों की सराहना करते हुए प्रेम, सद्भाव और सकारात्मक सोच अपनाने का संदेश दिया।

आरती, गरबा-डांडिया और सामूहिक सहभागिता से सजा यह समारोह विद्यार्थियों के लिए यादगार बना। कार्यक्रम का समापन दशहरा की शुभकामनाओं और सदाचार के संदेश के साथ हुआ।

सच्चे धर्म की पहचान: कर्म, सत्य और इंसानियत।

हरिओम बाजपेई।



नादान। आज के दौर में 'धर्म' शब्द का दायरा अक्सर पूजा-पाठ, रीति-रिवाजों और शब्दों की सीमाओं तक सिमट कर रह गया है। चारों तरफ धर्म के नाम पर बहस और दूरियां बढ़ती हुई नजर आती हैं। ऐसे में यह सवाल सबसे अहम हो जाता है कि आखिर सच्चा धर्म है क्या क्या धर्म केवल कुछ मान्यताओं का नाम है, या इसका संबंध हमारे दैनिक जीवन और आचरण से है

संतों और महापुरुषों ने हमेशा यही सिखाया है कि धर्म का अर्थ सत्य के मार्ग पर चलना है। सच्चा धर्म वह नहीं जो केवल हमारी जुबान या दिखावे के शब्दों में दिखाई दे, बल्कि वह है जो हमारे कर्मों में झलकता है। यदि हमारे बोलने, उठने-बैठने और व्यवहार में सच्चाई नहीं है, तो बाहरी अनुष्ठान का कोई अर्थ नहीं रह जाता। सच्चे धर्म को किसी एक संप्रदाय में नहीं बांधा जा सकता, इसके कुछ सार्वभौमिक और शाश्वत आधार हैं, जीवन के हर परिस्थिति में सच्चाई का साथ देना। हर किसी के साथ निष्पक्ष रहना और किसी का हक न मारना। दूसरों के दुख-दर्द को समझना और मदद के लिए आगे आना। न तो खुद किसी पर अत्याचार करना और न ही किसी के साथ हो रहे अन्याय को चुपचाप सहना।मानवता के लिए आज की सबसे बड़ी जरूरत विभिन्न मान्यताएं, पंथ और पद्धतियां अनेक हो सकती हैं, और यह विविधता समाज की सुंदरता भी है। लेकिन इन सबकी मूल भावना एक ही है सत्य और इंसानियत का मार्ग। यही वह साझा धागा है जो इंसानों को इंसान से जोड़ता है।आज की भागदौड़ भरी और स्वार्थी होती दुनिया में, जहां इंसान और इंसान के बीच दूरियां बढ़ रही हैं, मान वता की रक्षा के लिए करुणा, प्रेम और सच्चे धर्म के आचरण की सबसे अधिक आवश्यकता है। जब तक हम अपने कर्मों में इंसानियत को नहीं उतारेंगे, तब तक शांति और भाईचारे की कल्पना करना भी अधूरा है।

धर्म हमें पाखंड सिखाने के लिए नहीं, बल्कि बेहतर इंसान बनने के लिए प्रेरित करता है। आइए, बाहरी दिखावे से ऊपर उठकर अपने आचरण में सत्य और मानवता को अपनाएं, क्योंकि यही किसी भी व्यक्ति और समाज के लिए सबसे बड़ा और सच्चा धर्म है।

कोहना में भी सफल एस ओ मनीष का कर्तव्य पथ, मिशन शक्ति टीम ने किया बालिकाओं को जागरूक



सुनील बाजपेई

कानपुर। यहां अपर पुलिस महानिदेशक महिला एवं बाल सुरक्षा संगठन के आदेशानुसार अपर पुलिस उपायुक्त महिला अपराध कमिश्नरेट के निकट पर्यवेक्षण में व अपराधियों के खिलाफ प्रभावी कार्रवाई और पीड़ितों की सहायता में अग्रणी निष्पक्ष और पारदर्शी कार्यशैली के तेजतर्रार तथा व्यवहार कुशल जुझारू तेवरों वाले कोहना थाना प्रभारी मनीष चौहान के कुशल नेतृत्व में मिशन शक्ति केंद्र टीम द्वारा ग्राम मग्गनपुरवा चौकी क्षेत्र गंगा बैराज मे महिला कर्मियों के साथ उस क्षेत्र से संबंधित आशा बहुएं, आंगनबाड़ी कार्यकर्ता एवं स्वयं सहायता समूह की महिलाओं के साथ नवरात्रि विशेष कार्यक्रम आयोजित किया गया जिसमें स्कूल/कॉलेज में पढ़ने वाली छात्राओं, युवतियों एवं विवाहित महिलाओं द्वारा प्रतिभाग किया गया।

इस कार्यक्रम के दौरान महिलाओं तथा उनके बच्चों को शासन द्वारा महिलाओं/बालिकाओं के लिए जारी किए गए हेल्पलाइन नंबरों, सरकारी योजनाओं, थाने में स्थापित मिशन शक्ति केन्द्र की कार्यप्रणाली व साइबर जागरूकता स्वास्थ्य, स्वच्छता के सम्बन्ध में जानकारी प्रदान की गई। साथ ही सम्मेलन में उपस्थित महिलाओं/बालिकाओं से उनकी समस्याओं के विषय में पूछा गया तथा अविवाहित बालिकाओं से उन्हें किसी के द्वारा परेशान करने पर तत्काल मिशन शक्ति केंद्र के सी यू जी नंबर अथवा थाने के सीयूजी नंबर पर सूचित करने हेतु बताया गया।

नव श्री केशव रामलीला कमेटी : रोहिणी के जापानी पार्क में होगा 200 फुट उंचे रावण के पुतले का दहन- पुष्पेन्द्र रस्तोगी

रामलीला के सातवें दिन लंका दहन, राम सुग्रीव मित्रता व बाली वध का भावपूर्ण मंचन

परिवहन विशेष न्यूज





नई दिल्ली: राजधानी दिल्ली के रोहिणी स्थित जापानी पार्क, सेक्टर 11 के सामने भगवान गणेश के आहवान के साथ ही दस दिन तक चलने वाली नव श्री केशव रामलीला कमेटी के सातवें दिन राम सुग्रीव मित्रता, बाली वध व लंका दहन के मंचन को लोगों ने जमकर आनंद उठाया। लोगों ने अपने स्थान पर खड़े होकर इन कलाकारों का जोरदार तालियों से इनका हौसला बढ़ाया। मंच पर 120 फीट का विशाल एलईडी स्क्रीन पर श्रीडी एनीमेशन के द्वारा मंचन के दौरान जंगल, पहाड़, नंदियां आदि का दृश्य देख दर्शक अभिभूत हो उठे। रामलीला में बाली वध, सुग्रीव मित्रता व लंका हदन के मंचन ने दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया, पूरा रामलीला ग्राउंड जय श्रीराम के नारे गूंज उठा। आज टीवी कलाकार अक्षिता वात्सायन जैसे ही स्टेज पर आए उपस्थित लोगों ने जोरदार तालियों से उनका स्वागत किया। संस्था के सभी सदस्यों द्वारा स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित भी किया गया।

इस अवसर पर नव श्री केशव रामलीला कमेटी के चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी ने कहा कि कमेटी का उद्देश्य केवल धार्मिक मनोरंजन तक सीमित नहीं है, बल्कि रामायण में निहित आदर्शो, सत्य, मर्यादा, सेवा व भक्ति को समाज तक पहुंचाना है। उन्होने कहा कि कमेटी हर वर्ष और अधिक भव्यता एवं अनुशासन के साथ इस पावन अयोजन को प्रस्तुत करने के लिए संकल्पित है, ताकि नई पीढ़ी भी श्रीराम के जीवन से प्रेरणा ले सके।

इस अवसर पर संस्था के प्रेरणा स्तोत्र व दिल्ली के महापौर प्रवेश वाही, चेयरमैन पुष्पेन्द्र रस्तोगी, अध्यक्ष जय किशन बंसल, एडिशनल चेयरमैन संजय कुमार गुप्ता, महामंत्री कृष्ण जिंदल, कोषाध्यक्ष दिनेश सर्राफ, लीला महामंत्री हरि किशन मित्तल, कार्यालय महामंत्री पुरुषोतम लाल सिंघल सहित कई गणमान्य लोग उपस्थित थे। संस्था द्वारा आयोजित भव्य कार्यक्रम का यह 30वां वर्ष है।

सप्तमी नवरात्र पर 101 कन्याओं को जिमाई पंगत प्रसादी

शीतला माता की पंचम पदयात्रा सकुशल संपन्न होने पर हुआ आयोजन



दौसा। श्री शीतला माता सेवा समिति, दौसा के तत्वावधान में शीतला माता चाकसू की पंचम पदयात्रा सकुशल संपन्न होने के उपलक्ष्य में सप्तमी नवरात्र के अवसर पर 101 कन्याओं को पंगत में बैठाकर प्रसादी जिमाई गई। इस दौरान कन्याओं का पूजन कर उनका आशीर्वाद लिया गया। आयोजन में श्रद्धा, भक्ति और धार्मिक उत्साह का माहौल रहा।

समिति की ओर से माता रानी की कृपा और पदयात्रा के सफलतापूर्वक संपन्न होने पर यह धार्मिक आयोजन किया गया। इसमें कन्याओं को श्रद्धापूर्वक प्रसादी ग्रहण करवाई गई। इस अवसर पर यात्रा संयोजक नवरत्न सैनी, पप्पू लाल सैनी, मांगीलाल सैनी, विजय सैनी, अंकित सैनी, संतोष डॉन, बृजकिशोर तिवाड़ी सहित अन्य श्रद्धालु उपस्थित रहे।

बंगाली समिति की त्रिभाषी स्मारिका 'जया' का भव्य विमोचन, विधायक विपिन सिंह ने किया लोकार्पण

परिवहन विशेष न्यूज



गोरखपुर। बंगाली समिति, दुर्गाबाड़ी, गोरखपुर द्वारा शारदोत्सव के पावन अवसर पर प्रकाशित त्रिभाषी स्मारिका 'जया' का भव्य विमोचन समारोह गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ।समारोह में मुख्य अतिथि ग्रामीण विधायक विपिन सिंह, विशिष्ट अतिथि उत्तर प्रदेश राज्य महिला आयोग की उपाध्यक्ष चारु चौधरी एवं सीओ कोतवाली ओंकार दत्त तिवारी ने संयुक्त रूप से स्मारिका का विमोचन किया। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्ज्वलन से हुआ। समिति के संरक्षक डॉ. रूप कुमार बनर्जी, अध्यक्ष डॉ. अमरनाथ चटर्जी एवं उपाध्यक्ष विजय कृष्ण नन्दी ने विधायक विपिन सिंह को अंगवस्त्र और मां दुर्गा का चित्र भेंट कर सम्मानित किया। सचिव अभिषेक श्रीवास्तव 'बाबाई' एवं साहित्य सचिव दीपक चक्रवर्ती 'निशांत' ने चारु चौधरी का स्वागत किया। सीओ कोतवाली का सम्मान संयुक्त सचिव जयन्त चटर्जी एवं संचालक देवोजीत सेनगुप्ता ने किया। इस अवसर विधायक विपिन सिंह ने कहा कि इस प्रकार की स्मारिकाएं नई पीढ़ी को अपनी भाषा, संस्कृति और गौरवशाली विरासत से जोड़ने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। शारदोत्सव पर 'जया' का प्रकाशन सराहनीय पहल है। चारु चौधरी ने कहा कि मां दुर्गा शक्ति, साहस और आत्मसम्मान की प्रतीक हैं। ऐसे सांस्कृतिक आयोजन महिलाओं के सम्मान और सामाजिक जागरूकता का अवसर प्रदान करते हैं। संरक्षक डॉ. रूप कुमार बनर्जी ने कहा कि 'जया' केवल स्मारिका नहीं, बल्कि साहित्य, संस्कृति और सामाजिक सौहार्द को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास है। अध्यक्ष डॉ. अमरनाथ चटर्जी ने कहा कि इसके माध्यम से साहित्यकारों और संस्कृति प्रेमियों की भावनाओं को अभिव्यक्ति देने का प्रयास किया गया है।

समारोह का संचालन देवोजीत सेनगुप्ता ने किया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साहित्य प्रेमी, गणमान्य नागरिक और समिति के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

टेंपल आफ लिबरलाइजेशन एंड वेलफेयर अलाइड ट्रस्ट पंजीकृत

https://tolwa.com/about.html | tolwaindia@gmail.com, tolwadelhi@gmail.com

आज का साइबर सुरक्षा विचार



पिंकी कुंडू



पीड़ित संवेदनशीलता और जागरूकता वे निर्णायक कारक हैं जो एक साइबर धोखाधड़ी घटना को वित्तीय नुकसान से वित्तीय पुनर्प्राप्ति में बदल देते हैं। बरनाला मामला — 3 लाख रुपये 'बिना अनुमति' डेबिट, पंजाब महिला को रिफंड + 20,000 रुपये मुआवजा — यह एक पाठ्यपुस्तक उदाहरण है कि कैसे एक जागरूक, त्वरित और दृढ़ पीड़ित सिस्टम विफलताओं को पार कर न्याय प्राप्त कर सकता है।

कैसे पीड़ित संवेदनशीलता साइबर धोखाधड़ी मामलों में जीत दिलाती है

टेकअवेः जब पीड़ित जानते हैं कि क्या करना है, कब करना है, और कैसे दस्तावेज़ करना है, तब बैंक और अधिकारी अपनी जिम्मेदारी को नज़रअंदाज़ नहीं कर सकते।

1. त्वरित रिपोर्टिंग एक कानूनी ट्रेल बनाती है

महिला ने धोखाधड़ी वाले OTP और डेबिट को उसी दिन दोनों को रिपोर्ट कियाः – साइबरक्राइम पुलिस डृ अपने बैंक को

इस समय पर रिपोर्टिंग से स्थापित हुआः – उसने लेनदेन को अधिकृत नहीं किया डृ उसने OTP साझा नहीं किया डृ उसने जिम्मेदारी से कार्य किया

बाद में आयोग ने नोट किया कि वह तुरंत अधिकारियों के पास गई थी, जिससे उसकी विश्वसनीयता मजबूत हुई।

2. अधिकारों की जागरूकता बैंकों को दोष टालने से रोकती है

बैंक अक्सर तर्क देते हैंः डृ "ग्राहक ने ऑनलाइन बैंकिंग सक्रिय की।" डृ "OTP पंजीकृत मोबाइल पर भेजा गया।" डृ "दो कारक प्रमाणीकरण सहमति साबित करता है।"

लेकिन संवेदनशील पीड़ित जानते हैंः – OTP प्राप्त होना ≠ अनुमति • बैंक को उचित परिश्रम साबित करना चाहिए • बैंक को लाभार्थी खाते का पता लगाने के प्रयास दिखाने चाहिए

इस मामले में, बैंक कोई भी दस्तावेज़ प्रस्तुत नहीं कर सका जो दिखाए कि उसने लेनदेन को उलटने या पैसा कहाँ गया इसकी जांच करने की कोशिश की। आयोग ने इसे पूरी तरह से सिस्टम विफलता कहा।

3. दस्तावेज़ीकरण और दृढ़ता जवाबदेही सुनिश्चित करती है

पीड़ित ने बनाए रखाः • शिकायत की प्रतियां • OTP संदेश डृ बैंक संचार डृ साइबरक्राइम शिकायत संख्या

इस दस्तावेज़ीकरण ने आयोग को निष्कर्ष निकालने में मदद कीः डृ बैंक ने उसकी शिकायत के बावजूद कार्रवाई नहीं की डृ बैंक अपना सिस्टम "स्वच्छ, सुरक्षित, सुरक्षित और कार्यात्मक" रखने में विफल रहा डृ रिवर्सल गलत तरीके से अस्वीकार किया गया

उसकी दृढ़ता के परिणामस्वरूपः डृ 3 लाख रुपये रिफंड डृ 15,000 रुपये मानसिक उत्पीड़न का मुआवजा डृ 5,000 रुपये मुकदमेबाजी लागत कुलः 20,000 रुपये अतिरिक्त राहत

4. उपभोक्ता मंचों को उपाय के रूप में समझना

पीड़ित संवेदनशीलता में यह जानना शामिल है किः डृ साइबर धोखाधड़ी पीड़ित जिला उपभोक्ता आयोगों से संपर्क कर सकते हैं डृ बैंक सेवा प्रदाता हैं और सुरक्षित सिस्टम सुनिश्चित करना चाहिए डृ कार्रवाई न करना = सेवा में कमी

आयोग ने बैंक को सिस्टम विफलता के लिए जिम्मेदार ठहराया और रिफंड का आदेश दिया।

5. जागरूकता बैंक की कथाओं का मुकाबला करने में मदद करती है

बैंक ने तर्क दियाः डृ उसने घरेलू ऑनलाइन लेनदेन सक्रिय किए डृ OTP उसके नंबर पर भेजा गया डृ उसने सत्यापन कॉल का जवाब नहीं दिया

लेकिन संवेदनशील पीड़ित जानते हैंः डृ बैंक को वास्तविक अनुमति साबित करनी चाहिए, केवल OTP भेजना नहीं डृ बैंक को धन का पता लगाने और पुनर्प्राप्त करने के प्रयास दिखाने चाहिए डृ बैंक को सुरक्षित सिस्टम बनाए रखना चाहिए

आयोग ने सबूतों की कमी के कारण बैंक के दावों को खारिज कर दिया।

क्यों पीड़ित जागरूकता जीतती है — मामले से सीखें

1. जागरूकता → त्वरित कार्रवाई → मजबूत मामला देरी मामलों को कमजोर करती है। त्वरित रिपोर्टिंग उन्हें मजबूत करती है।
2. जागरूकता → दस्तावेज़ीकरण → साक्ष्य जो पीड़ित संदेश, OTP, शिकायत संख्या और बैंक प्रतिक्रियाएं सुरक्षित रखते हैं, वे मजबूत मामले बनाते हैं।
3. जागरूकता → कानूनी ज्ञान → सही मंच यह जानना कि उपभोक्ता अदालतें रिफंड का आदेश दे सकती हैं, पीड़ितों को सशक्त बनाता है।
4. जागरूकता → दृढ़ता → बैंक जवाबदेही जो पीड़ित बैंकों को चुनौती देते हैं, वे उन्हें तकनीकी बहानों के पीछे छिपने से रोकते हैं।
5. जागरूकता → धोखाधड़ी पैटर्न की समझ जो पीड़ित जानते हैं किः • OTP धोखाधड़ी आम हैं डृ SIM स्वैप, मैलवेयर और स्पूफिंग OTP ट्रिगर कर सकते हैं डृ बैंक को लाभार्थी खातों की जांच करनी चाहिए

साइबर धोखाधड़ी प्रबंधन के लिए व्यापक निहितार्थ

यह मामला दिखाता है कि पीड़ित संवेदनशीलता वैकल्पिक नहीं है — यह साइबर धोखाधड़ी के खिलाफ सबसे मजबूत रक्षा है। जब पीड़ित तेजी से और दृढ़ता से कार्य करते हैं, बैंक प्रक्रियात्मक बहानों के पीछे नहीं छिप सकते।

परिवहन विशेष समाचार पत्र से जुड़े सभी पाठकों और सहयोगियों के लिए विशेष सूचना

परिवहन विशेष समाचार पत्र को जिस तरह आप लोगों के सहयोग लगातार पिछले 3 वर्षों से प्राप्त हुआ और दिन प्रतिदिन आपकी आवाज को आगे पहुंचाने में आपका सहयोगी बना उसको देखते हुए परिवहन विशेष समाचार पत्र के प्रबंधक मंडल और ट्रांसपोर्ट विशेष न्यूज लिमिटेड कंपनी द्वारा जनहित, जनकल्याण जनसूचना और जानकारी को और तेजी से भारत सरकार और राज्य सरकारों के साथ सभी राजनीतिक संगठनों को सबसे पहले पहुंचाने के उद्देश्य से अक्टूबर माह से जनता की आवाज का अपना चैनल "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" शुरू करने का निर्णय लिया है।

जल्द आपके बीच में....

परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन

बड़ी खुशखबरी! अब आपकी आवाज गूंजेगी पूरी दुनिया में
परिवहन विशेष समाचार पत्र के सफल 3 वर्षों के बाद अब नई क्रांति

आशा करते हैं की हम अपने चैनल के माध्यम से आपको 1. प्रतिदिन की देश विदेश की जानकारी 2. आपके वह आपके बच्चों के कैरियर, 3. आपके बच्चों के भविष्य से संबंधित ज्ञानवर्धक आवश्यक जानकारिया, 4. आपकी सेहत से जुड़ी सभी उपयोगी जानकारियां 5. शारीरिक बीमारियों से बचने के तरीके 6. धार्मिक एवं आध्यात्मिक ज्ञान विश्व के सभी क्षेत्रों के ज्ञानदाताओं के माध्यम से प्रदान करने का प्रयास करेंगे। हम अपने चैनल द्वारा प्रतिदिन एक घंटे के कार्यक्रम "जनता की पुकार" में आपकी आवाज को विश्व के सामने प्रस्तुत कर सरकार और सरकारी विभागों के साथ माननीय न्यायालयों से उसके उचित हल और उसके प्रति पालिसी लागू करवाने में मध्यांतर का माध्यम बनेंगे। आप सभी से अनुरोध आप के अपने शुरू होने वाले चैनल के माध्यम से अपनी शिकायतें, परेशानियां और अनुभव अन्य सभी से साझा करने के लिए तैयार एवं तत्पर रहे। आशा करते हैं जैसे आपने आज के इस दौर में "परिवहन विशेष समाचार पत्रों" को इतना आगे ले कर जाने में सहयोग दिया उसी प्रकार हमारे द्वारा आपकी आवाज बनने के लिए शुरू किए जा रहे "परिवहन विशेष न्यूज दूरदर्शन" को विश्व का सबसे बड़ा चैनल बनवाएंगे।

संजय बाठला
मुख्य संपादक

ओडिशा के नवनियुक्त राज्यपाल ब्रजमोहन राम का

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओड़िशा



भुवनेश्वरः ओडिशा के नवनियुक्त राज्यपाल ब्रजमोहन राम के भुवनेश्वर स्थित बीजू पटनायक अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डे पर पहुंचने पर उनका भव्य स्वागत किया गया। इस अवसर पर उन्हें गार्ड ऑफ ऑनर भी दिया गया।

मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी, मुख्य सचिव, मंत्रियों और विधायकों ने नवनियुक्त राज्यपाल का स्वागत किया।

हवाई अड्डे से ब्रजमोहन राम पुरी के लिए रवाना हुए, जहां वे महाप्रभु श्रीजगन्नाथ के दर्शन और पूजा-अर्चना करेंगे। शाम को पुरी से लौटने के बाद वे रात 7:25 बजे लोकभवन पहुंचेंगे। राज्यपाल के आगमन और शपथ ग्रहण समारोह को लेकर प्रशासन की ओर से व्यापक तैयारियां की गई हैं। ब्रजमोहन राम 18 अक्टूबर को सुबह 11 बजे भुवनेश्वर स्थित लोकभवन के नवनिर्मित अभिषेक हॉल में ओडिशा के राज्यपाल के रूप में शपथ ग्रहण करेंगे।

समारोह में शामिल होने के लिए लगभग 300 अतिथियों के ओडिशा पहुंचने की संभावना है। अतिथियों के स्वागत, ठहरने और अन्य व्यवस्थाओं के लिए लोकभवन की ओर से विशेष इंतजाम किए गए हैं। 17 से 20 अक्टूबर तक विभिन्न कार्यक्रमों और अतिथियों की सुविधा के लिए तैयारियां की गई हैं। हालांकि, राज्यपाल के शपथ ग्रहण समारोह और अतिथियों के लिए की जा रही व्यापक व्यवस्थाओं को लेकर विपक्षी राजनीतिक हलकों में सवाल उठाए जा रहे हैं।

कॉलेज चुनाव बंद कराकर BJD ने जो पाप किया था, आज उसी का फल भुगत रही है: अनिल बिस्वाल

मनोरंजन शासमल , स्टेट हेड ओडिशा



भुवनेश्वरः ओडिशा में पिछले आठ वर्षों से बीजू जनता दल (BJD) कॉलेज छात्रसंघ चुनाव नहीं होने दे रही थी। चुनाव बंद कराकर BJD ने जो पाप किया था, आज उसे उसी का फल भुगतना पड़ रहा है। BJD भी कांग्रेस जैसी बीमारी से ग्रस्त है। जीतने पर सब कुछ ठीक रहता है, लेकिन हारने पर अनियमितताओं का आरोप लगाया जाता है। इस बार छात्र समुदाय ने आंदोलनजीवियों को करारा जवाब दिया है। BJD और कांग्रेस के झूठे नैरेटिव को भी कड़ा जवाब मिला है। यह बयान भाजपा के प्रवक्ता अनिल बिस्वाल ने दिया।

उन्होंने कहा कि इस बार ओडिशा में राष्ट्रवादी छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) ने 13 में से आठ विश्वविद्यालयों में अध्यक्ष पद और 11 विश्वविद्यालयों में महासचिव पद हासिल कर यह साबित कर दिया है कि राज्य का छात्र समुदाय राष्ट्रवाद के पक्ष में है।

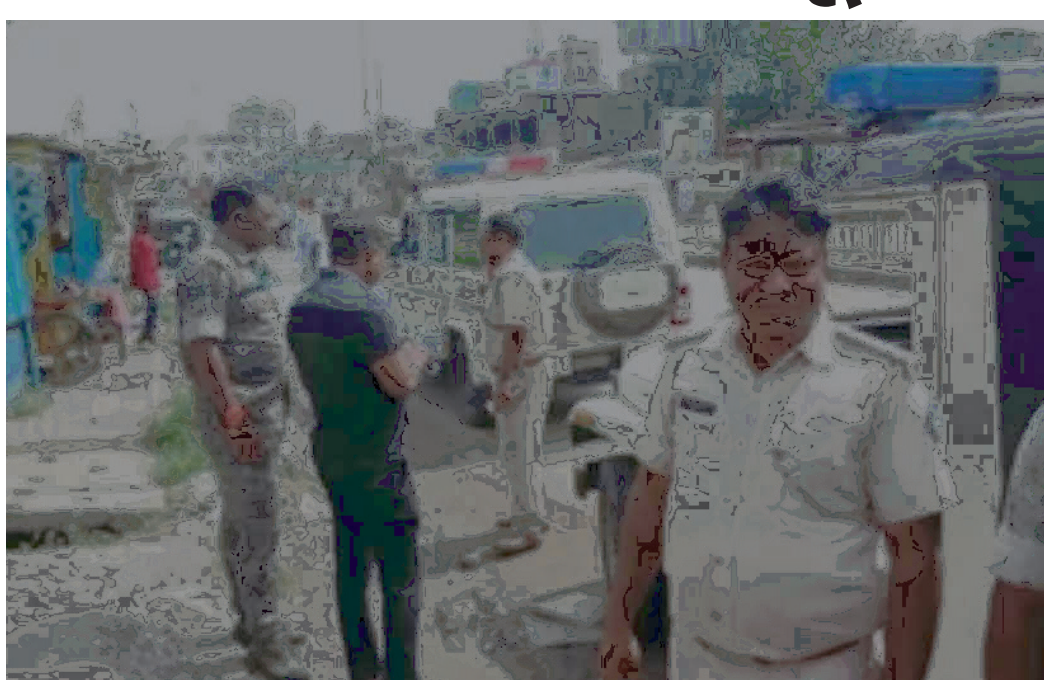
इस बीच, ओडिशा के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रसंघ चुनावों में शानदार जीत हासिल करने पर केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने ABVP के कार्यकर्ताओं को बधाई दी है। अमित शाह ने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि ओडिशा के छात्रसंघ चुनावों में शानदार जीत दर्ज करने वाले @abvpodisha के सभी कार्यकर्ताओं को हार्दिक बधाई। उन्होंने कहा कि पहले पंजाब विश्वविद्यालय, फिर दिल्ली विश्वविद्यालय और अब ओडिशा के 13 विश्वविद्यालयों में ABVP की जीत स्पष्ट संदेश देती है कि देश की युवा शक्ति झूठ, भ्रम और अव्यवस्था फैलाने वाली ताकतों के साथ नहीं, बल्कि 'राष्ट्र प्रथम' की विचारधारा के साथ मजबूती से खड़ी है।

अमित शाह ने इस परिणाम को देशविरोधी ताकतों के लिए करारा जवाब बताते हुए कहा कि विपक्ष की विभाजनकारी राजनीति को पीछे छोड़कर ओडिशा के छात्र-छात्राओं और युवाओं ने छात्रहित एवं राष्ट्रहित के समर्थन में अपना भरोसा जताया है। उन्होंने कहा कि राज्य के सैकड़ों कॉलेजों और विश्वविद्यालयों में ABVP ने शानदार जीत हासिल की है।

वहीं, मुख्यमंत्री मोहन चरण माझी ने भी ABVP को बधाई दी है। उन्होंने अपने सोशल मीडिया अकाउंट 'एक्स' पर लिखा कि राज्य के विभिन्न कॉलेजों और विश्वविद्यालयों के छात्रसंघ चुनावों में शानदार जीत हासिल करने पर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (ABVP) को हार्दिक बधाई।

दुर्गा पुजा के दौरान बोकारो में 21 लाख रूपये की दिन दहाड़े लूट

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड



रांची, झारखंड के बोकारो जिले में शनिवार को दिनदहाड़े 21.40 लाख रुपए की लूट हो गई। बाइक सवार दो बदमाशों ने इस वारदात को माराफारी थाना क्षेत्र में स्थित बोकारोनाथ धाम शिव मंदिर के पास अंजाम दिया। इस दौरान अपराधियों ने एटीएम में डालने के लिए ले जाई जा रही इस रकम को हिताची कंपनी के एक कर्मचारी से लूट लिया।

प्राप्त जानकारी के अनुसार पल्सर बाइक पर सवार दो बदमाशों ने पीड़ित कर्मचारी को रास्ते में रोककर गाली-गलौज और हाथापाई की, इसके बाद उसे जान से मारने की धमकी देते हुए उससे रुपए छीन लिए और लूटकर फरार हो गए। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस मौके पर पहुंची और जांच शुरू कर दी।

हिताची कंपनी के पीड़ित कर्मचारी जिसकी पहचान विजय कुमार के रूप में हुई है, उसने पुलिस को बताया कि वह नया मोड़ स्थित एक्सिस बैंक से 21.40 लाख रुपए लेकर कुर्मीडीह और बालीडीह स्थित कंपनी के एटीएम में राशि जमा करने जा रहा था। इसी दौरान बोकारो नाथ धाम शिव मंदिर के पास बाइक सवार दो अपराधियों ने उसे रोक लिया और उसके साथ गाली-गलौज और हाथापाई करना शुरू कर दिया। इसके बाद उन दोनों आरोपियों ने उससे रुपए लूट लिए और मौके से फरार हो गए।

पीड़ित कर्मचारी विजय कुमार ने पुलिस को बताया कि दो दिनों तक बैंक बंद रहने के कारण शनिवार को बैंक से अधिक राशि निकाली गई थी, जिसे दोनों एटीएम में जमा करना था। उन्होंने बताया कि आमतौर पर वह कम रकम लेकर जाते हैं, लेकिन इस बार राशि ज्यादा थी। इसी दौरान अपराधियों ने लूट की घटना को अंजाम दे दिया।

घटना के बाद पुलिस आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज खंगाल रही है, ताकि अपराधियों की पहचान की जा सके। मुख्यालय डीएसपी पवन कुमार ने बताया कि पुलिस ने मामले की जांच शुरू कर दी है और इस दौरान घटनास्थल के आसपास लगे सीसीटीवी कैमरों की फुटेज की जांच की जा रही है। साथ ही, निर्धारित सुरक्षा प्रोटोकॉल का पालन किए बिना इतनी बड़ी रकम ले जाए जाने के मामले की भी पड़ताल की जाएगी। पुलिस अपराधियों की पहचान कर उनकी गिरफ्तारी की कोशिश कर रही है।

झारखंड में अवैध कोयला व्यापार से कमाई गयी रू136करोड की सम्पत्ती ईडी ने किया कुर्क

अनुप माझी उर्फ लाला की सिंडिकेट पर पुनः कार्रवाई

कार्तिक कुमार परिच्छा, स्टेट हेड झारखंड

रांची, प्रवर्तन निदेशालय ने पूर्वी कोलफील्ड्स लिमिटेड के लीजहोल्ड क्षेत्रों में अवैध कोयला खनन और चोरी से जुड़े मामले में अनूप माझी उर्फ लाला के सिंडिकेट पर बड़ी कार्रवाई करते हुए 136.44 करोड़ रुपये की अचल व चल संपत्तियों को अस्थायी रूप से कुर्क किया है। धन शोधन निवारण अधिनियम के तहत की गई इस नई कार्रवाई के बाद इस मामले में कुर्क की जा चुकी कुल संपत्ति का आंकड़ा बढ़कर 815.08 करोड़ रुपये पर पहुंच गया है। इससे पहले जांच एजेंसी ने इस मामले में 678.64 करोड़ रुपये की संपत्ति जब्त की थी

जांच में सामने आया है कि अनूप माझी के नेतृत्व वाला यह सिंडिकेट लंबे समय से पूर्वी कोलफील्ड्स लिमिटेड के लीजहोल्ड वाले इलाकों से अवैध तरीके से कोयले की खुदाई करता था। इस तरह चोरी किए गए कोयले को पश्चिम बंगाल की अलग-अलग फैक्ट्रियों में नकद लेकर बेचा जाता था। इस पूरे अवैध नेटवर्क को संचालित करने में स्थानीय प्रशासन के कुछ अधिकारियों की भी सक्रिय मदद और शह मिलती थी।

कोयला तस्करी से अर्जित काली कमाई को छिपाने के लिए बड़े पैमाने पर शेल कंपनियों का गठन किया गया था। ये कंपनियां कागजों पर अनूप माझी के नियंत्रण में थीं, लेकिन उन्हें उसके रिश्तेदारों, कर्मचारियों और करीबी सहयोगी गुरुपद माझी के नाम पर पंजीकृत कराया गया था। कोयले की अवैध बिक्री से प्राप्त नकद रकम को इन शेल कंपनियों के जरिये अकोमोडेशन एंट्री के माध्यम से घुमाया जाता था। इसके बाद अलग-अलग बैंक खातों में रकम जमा कराई जाती थी, ताकि धन के असली स्रोत और उसके वास्तविक मालिकाना हक को पूरी तरह से छिपाया जा सके।



अवैध कारोबार से हासिल की गई रकम को वैध रूप देने के लिए आरोपी सिंडिकेट ने पर्यटन और रिसॉर्ट कारोबार में बड़ा निवेश किया था। प्रवर्तन निदेशालय की ताजा कार्रवाई के तहत पुरुलिया में स्थित गढ़ पंचकोट इको टूरिज्म और बांकुड़ा स्थित विहारीनाथ इको टूरिज्म नामक दो बड़े होटल और रिसॉर्ट को कुर्क कर लिया गया है। कोलकाता में स्थित दो अचल संपत्तियों, शेल कंपनियों के बैंक खातों में जमा शेष राशि और माझी परिवार के सदस्यों के नाम पर किए गए शेयर तथा म्यूचुअल फंड निवेश को भी कुर्की की जद में लाया गया है। जांच एजेंसी का मानना है कि इन संपत्तियों का निर्माण पूरी तरह से कोयला तस्करी से अर्जित की गई रकम के जरिये ही किया गया था।

पूर्वी कोलफील्ड्स लिमिटेड के क्षेत्रों में लंबे समय से जारी अवैध खनन और धन शोधन के इस जटिल नेटवर्क को खंगालने में जांच एजेंसी जुटी हुई है। इससे पहले भी इस सिंडिकेट के कई ठिकानों पर छापेमारी और जब्ती की कार्रवाइयां की जा चुकी हैं।

स्वामी, मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक संजय कुमार बाटला द्वारा इम्प्रेशंस प्रिंटिंग एंड पैकेजिंग लिमिटेड, सी-18,19,20 सेक्टर 59, नोएडा (उत्तर प्रदेश) से मुद्रित एवं 3, प्रियदर्शनी अपार्टमेंट ए-4, पश्चिमी विहार, नई दिल्ली- 110063 से प्रकाशित। सम्पर्क : 9212122095, 9811902095. newstransportvishesh@gmail.com
(इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी) किसी भी कानूनी विवाद की स्थिति में निपटारा दिल्ली के न्यायालय के अधीन होंगे। RNI No :- DELHIN/2023/86499. DCP Licensing Number F.2 (P-2) Press/2023